3

अनुवाद की प्रक्रिया

The Process of Translation

12132CH03

© NCERT not to be republished

3. अनुवाद की प्रक्रिया

I. संक्षिप्त परिचय

II. विश्लेषण

III. भाषांतरण

IV. पुनर्रचना

3. *The Process of Translation*

I. An Introduction

II. Analysis

III. Transference

IV. Restructuring

© NCERT
not to be republished

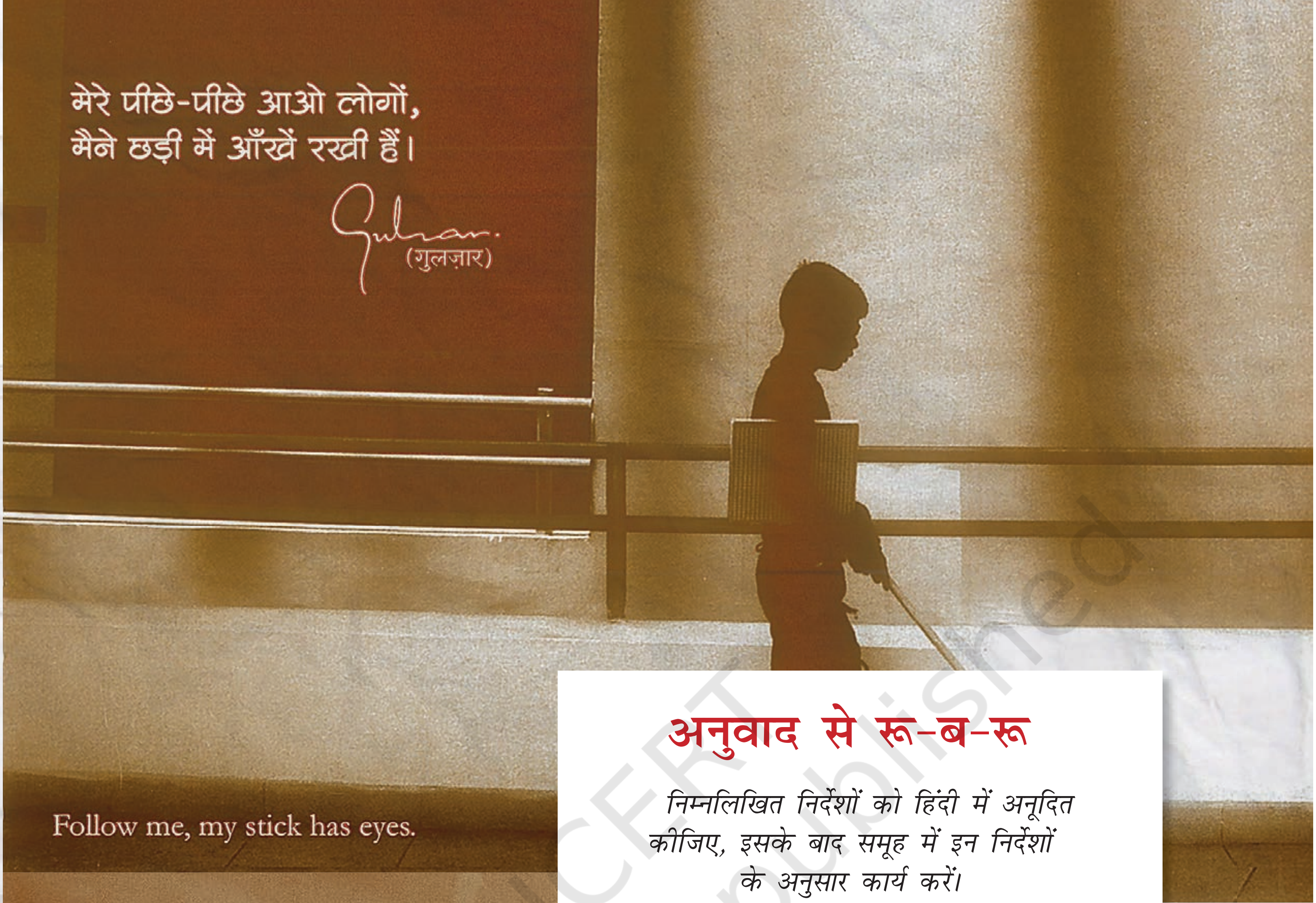

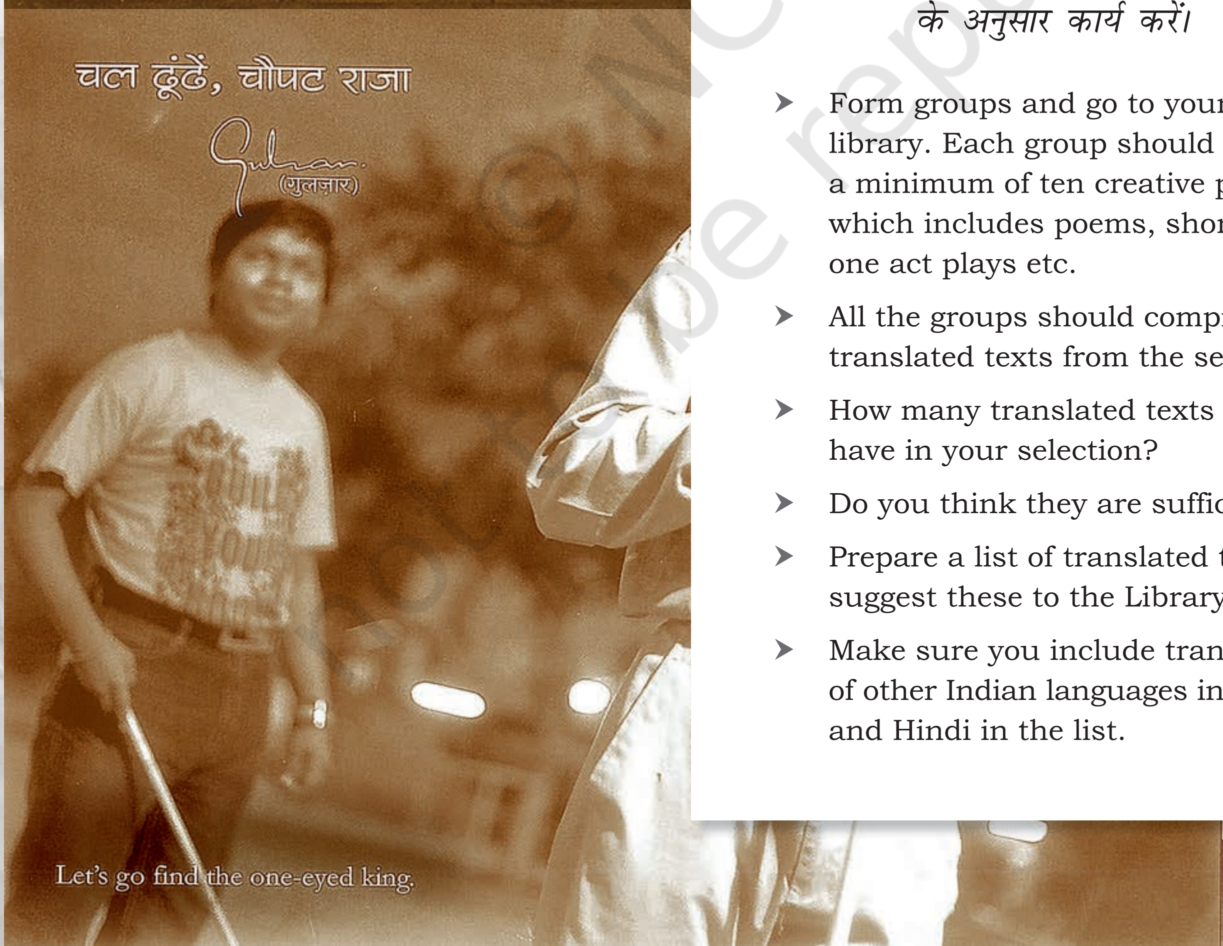

अनुवाद से रू-ब-रू

निम्नलिखित निर्देशों को हिंदी में अनूदित कीजिए, इसके बाद समूह में इन निर्देशों के अनुसार कार्य करें।

- Form groups and go to your school library. Each group should select a minimum of ten creative pieces which includes poems, short stories, one act plays etc.
- All the groups should compile a list of translated texts from the selections.
- How many translated texts do you have in your selection?
- Do you think they are sufficient why?
- Prepare a list of translated texts and suggest these to the Library Incharge.
- Make sure you include translations of other Indian languages into English and Hindi in the list.

साभार–आरुषि के कैलेंडर से

© NCERT not to be republished

I. संक्षिप्त परिचय

हंपटी-डंपटी चढ़ गया चट,
हंपटी-डंपटी गिर गया फ़ट
राजा के नौकर, राजा के घोड़े
हंपटी-डंपटी कभी न जोड़ें।

Humpty Dumpty sat on a wall
Humpty Dumpty had a great fall
All the king's horses,
And all the king's men
Couldn't put humpty together again!

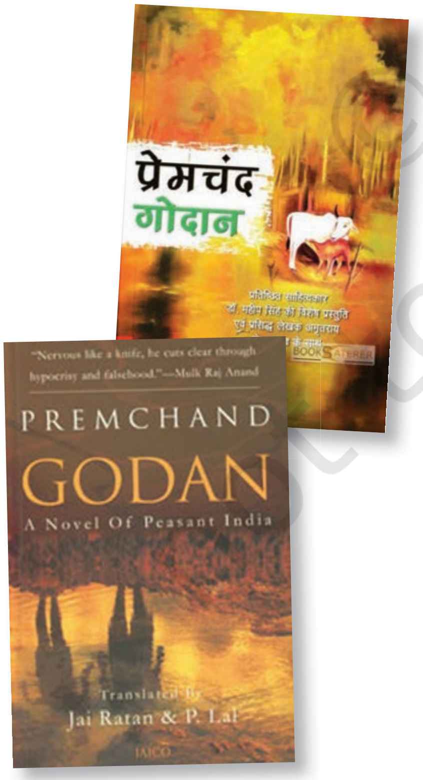

यह बहु-प्रचलित अंग्रेज़ी नर्सरी राइम का अनुवाद है। अनुवाद करते समय बहुत-से ऐसे परिवर्तन किए गए हैं जो सृजनात्मक अनुवाद करते समय ज़रूरी होते हैं–उदाहरण के लिए राजा प्रभावशाली होता है, कुछ भी करा सकने में समर्थ। मूल पाठ राजा के नौकरों की मजबूरी संकेतित करता है–'कुड नॉट पुट हंपटी-डंपटी टूगेदर अगेन'। अनुवाद में राजा की मंशा पर संदेह व्यक्त किया गया है– 'हंपटी-डंपटी कभी न जोड़ें' सुनकर ऐसा लगता है कि चाहते तो जोड़ लेते लेकिन चाहते ही नहीं। दूसरा अनुवाद और भी रचनात्मक है, और उसके अंतर्पाठीय प्रयाण काफ़ी महत्वपूर्ण जान पड़ते हैं। मूल राइम है–

'लिटिल मिस मफ़ेट
सैट ऑन अ टफ़ेट
ईटिंग हर कड्र्स ऐण्ड ह्वे
देयर केम अ बिग स्पाइडर
एण्ड सैट डाउन बिसाइड हर
इट फ्राइटेण्ड मिस मफ़ेट अवे'।

अनुवाद इसे ऐसे पढ़ता है–
मुफ़्ती माई, दलाई-मलाई,
घास में बैठके खाई,
जब बड़ा-सा मकड़ा
उसकी साड़ी को पकड़ा
भागी मुफ़्ती माई

सबसे पहले तो यहाँ 'मिस मफ़ेट' की मेम साहिबी झाड़ी गई है और उसे एक छोटी लड़की के बदले 'माई' बना दिया गया है–एक अम्मा जो प्रेमचंद की 'बूढ़ी काकी', उदयप्रकाश के 'छत्तीस तोले का करधन' की बुढ़िया और निराला के 'भिक्षुक' की तरह दाने-दाने को मोहताज़ है। घर में खाना नहीं मिलता तो कहीं से बटोरकर लाती है। और घर के बाहर, कहीं घास पर बैठकर खाती है। निराला के भिक्षुकों की स्पर्द्धा जूठे पत्तलों के पास मँडराते कुत्तों से बनती है–

चाट रहे हैं जूठे पत्तल

© NCERT not to be republished

कहीं सड़क पर खड़े हुए
और झपट लेने को उनसे
कुत्ते भी है अड़े हुए।

यहाँ कुत्ते नहीं है पर मकड़ा है। यह बड़ा-सा मकड़ा अंग्रेज़ भी हो सकता है। इस तरह के सैकड़ों प्रतिकार अनुवाद के माध्यम से घटित हुए होंगे। अनुवाद करते समय इस तरह के तमाम बदलाव परिवेश, भाषा और समय के अनुसार भी होते हैं। जैसे भारतेंदु हरिश्चंद्र ने '*मर्चेंट ऑफ़ वेनिस*' का जब अनुवाद करना शुरू किया था तो 'वेनिस के व्यापारी' के नाम से शुरू किया। भाषा नीति बदली तो बाद में उसका एक हिस्सा 'वेनिस के सौदागर' नाम से प्रकाशित हुआ। इस तरह के अनुवाद सृजनात्मक प्रक्रिया द्वारा ही संभव है, पर एक भाषा से दूसरी भाषा में आवाजाही करने के लिए कुछ ज़रूरी बातों पर ध्यान देना होगा।

II. विश्लेषण

अनुवाद का अर्थ है–किसी भी मसौदे को एक भाषा से दूसरी भाषा में इस तरह बदलना कि मूल मसौदे का आशय अनूदित मसौदे में आ जाए। सामान्य गद्य–खबरों, लेखों, विज्ञापनों का अनुवाद इसी प्रकार किया जाता है। इसका अर्थ यह हुआ कि अनुवाद की पहली शर्त है–किन्हीं भी दो भाषाओं में महारत होना। एक वह, जिससे अनुवाद किया जाना है, दूसरी वह जिसमें अनुवाद किया जाना है। किंतु सृजनात्मक साहित्य अर्थात् कविता, नाटक, कहानी के अनुवाद के लिए महज़ दो भाषाओं में महारत को ही पर्याप्त नहीं माना जा सकता। कहानी और नाटक में संवाद होते हैं और संवादों का रूप हरेक भाषा में, बोलचाल के लहज़े के हिसाब से अलग तरह का होता है। उनमें मुहावरे होते हैं, व्यंग्य का, गुस्से का, प्रसन्नता का, विस्मय का भाव होता है। मात्र शब्दकोश की सहायता से या

देखें गतिविधि/Activity 22 पृष्ठ 147

गतिविधि–23 Activity–23

Beat him, he bears it; give him damp hay, he'll go to it with relish. Springtime, we are told, elicts a few happy brays, but rarely is a donkey ecstatic. His face is a mask of poise, ascetic detachment and self-control. The stream of joy and sorrow, loss and gain, passes him by. Our finest *rishis* have not attained the donkey's remarkable selflessness, yet we insist on calling him a fool. An unkind cut this, belittling genius. Doesn't it reveal how contemptuous we are of simplicity?

– A tale of two oxen, Premchand

- प्रेमचंद की कहानी 'दो बैलों की कथा' कहानी के निम्नलिखित अंश का हिंदी में अनुवाद कीजिए।
- मूल कहानी खोजकर पढ़िए।
- अब अपने अनुवाद से इसकी तुलना कीजिए।

Read the following passage:

बेहद मोटा, मांस का पहाड़ जैसा दिखने वाला पाइक्राफ़्ट मुझे पहली बार इसी क्लब में मिला था। उन दिनों मैं क्लब का नया-नया सदस्य बना था। परिचय के बाद पाइक्राफ़्ट मुझसे जल्दी ही घुलमिल गया। एक दिन वह अपने मोटापे की समस्या पर चर्चा करते हुए बोला, "मैं अपना वज़न कम करने के लिए कुछ भी कर सकता हूँ।"

– पाइक्राफ़्ट का मोटापा, एच.जी. वेल्स

- Translate the above passage from H.G. Wells's science fiction 'The Truth About Pie Craft' into English.
- Read the original story.
- Compare your translation with that of the original.

© NCERT not to be republished

अर्जित सामान्य भाषा-ज्ञान के सहारे संवादों का एक से दूसरी भाषा में अनुवाद नहीं किया जा सकता। अगर किया जाएगा, तो उनमें एक तरह का सपाटपन होगा। वह स्वाभाविक रंग उनमें नहीं होगा, जो किसी भाषा में बोलचाल की रवानी का होता है। इसके साथ-साथ कहानी में वृत्तांत या नैरेशन की भी अपनी अलग विशिष्टता होती है—हर भाषा की, यहाँ तक कि हरेक कथाकार की अपनी एक खास शैली होती है—कहानी कहने की। इस दृष्टि से कहानी या नाटक के अनुवाद का काम सामान्य अनुवाद की तुलना में अलग तरह का और विशिष्ट हो जाता है। सिर्फ़ भाषा-ज्ञान के सहारे उसे ठीक-ठीक अंजाम नहीं दिया जा सकता। वहाँ एक भाषा के सृजनात्मक स्वभाव को दूसरी भाषा के सृजनात्मक स्वभाव में इस तरह ढालना होता है कि अनुवाद जैसा न लगे। मूल भाषा या स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में अनुवाद करते हुए लक्ष्य भाषा की स्वाभाविक रंगत लाना यहाँ अनुवादक की कसौटी होगी।

नाटक के अनुवाद में तो सामान्य अनुवाद-प्रक्रिया से काम चला लिया जाएगा, क्योंकि वहाँ निर्देशक और अभिनेता अभिनय की ज़रूरत के अनुसार संवादों को बदल लेते हैं, किंतु कहानी को तो सीधे छपकर पाठक से ही मुखातिब होना है। यही कारण है कि कहानी का अनुवाद करते हुए अनुवादक को दोहरी भूमिकाएँ निभानी होती हैं—मूल या स्रोत भाषा की रचना में पैठकर उसकी अंतरात्मा से एकाकार होना और फिर लक्ष्य भाषा में रूपांतरित करते हुए उसे उस भाषा की कहानी का मौलिक चोला पहनाना। इस काम को सफ़लतापूर्वक तभी अंजाम दिया जा सकता है, जब अनुवादक स्वयं अपनी भाषा का कहानीकार हो या कम-से-कम कहानियों का सहृदय पाठक तो हो ही कि उसे कहानी-लेखन की मूलभूत स्थापनाओं का बुनियादी ज्ञान हो। वह भाषा की बारीकियाँ जानता हो।

अनुवाद को लेकर दो दृष्टियाँ

अनुवाद को लेकर दो दृष्टियाँ दिखाई पड़ती हैं—एक पाठपरक और दूसरी प्रक्रियापरक। पाठपरक दृष्टि में हम अनूदित रचना को एक बनी बनाई रचना की तरह देखते हैं और उसमें कोई परिवर्तन करना ठीक नहीं माना जाता। इसमें ध्यान इस बात पर होता है कि अनूदित पाठ मूल रचना के कितना नज़दीक है? वह कहाँ तक मूल रचना के संदेश को संप्रेषित करने में समर्थ है? और अपनी संरचनात्मक बनावट में भी मूल रचना के शिल्पविधान के कितना निकट है? यह दृष्टि कई मायनों में अनुवाद की अधूरी प्रक्रिया को लेकर चलती है। अनुवाद की प्रक्रिया में अनुवादक को तमाम ऐसे परिवर्तन करने पड़ते हैं, जिसे यह दृष्टि स्वीकार नहीं करती।

दूसरी दृष्टि है—प्रक्रियापरक दृष्टि। यह दृष्टि अनुवाद की सर्जनात्मकता को केंद्र में रखती है। अनुवाद करते समय अनुवाद की समस्याओं को ध्यान में रखते हुए यह दृष्टि मूल रचना को समझते हुए दूसरी भाषा में पुनर्रचना की बात करती है। यहाँ यह सवाल मायने रखता है कि कोई अनुवाद मूल रचना से भिन्न है तो क्यों?

अनुवाद की यह प्रक्रिया कैसे घटित होती है? इसका एक चित्र अगले पृष्ठ पर दिया जा रहा है।

भाषा वैज्ञानिकों के अनुसार अनुवाद प्रक्रिया के तीन सोपान हैं- (1) विश्लेषण, (2) अंतरण और (3) पुनर्गठन। एक कुशल और अनुभवी अनुवादक इन तीन विभिन्न सोपानों को एक छलाँग में पार कर लेता है। पर अनुवाद के प्रशिक्षार्थी को इन तीन सोपानों से क्रमशः गुज़रना पड़ता है। नाइडा ने अनुवाद के सोपानों को आरेखण द्वारा इस प्रकार व्यक्त किया है—

दो भाषाओं के संप्रेषण-व्यापार के संदर्भ में अनुवादक को तीन प्रकार की विशिष्ट

भूमिकाओं का निर्वाह करना पड़ता है– (1) मूल पाठ के पाठक की भूमिका, (2) (मूल पाठ के) संदेश को (अनूदित पाठ में) भाषांतरित करने वाले द्विभाषिक की भूमिका, और (3) अनूदित पाठ के रचयिता की भूमिका। आरेखण देखिए–

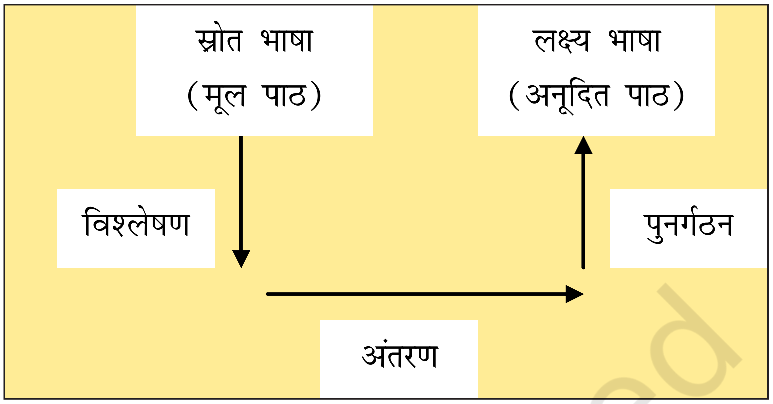

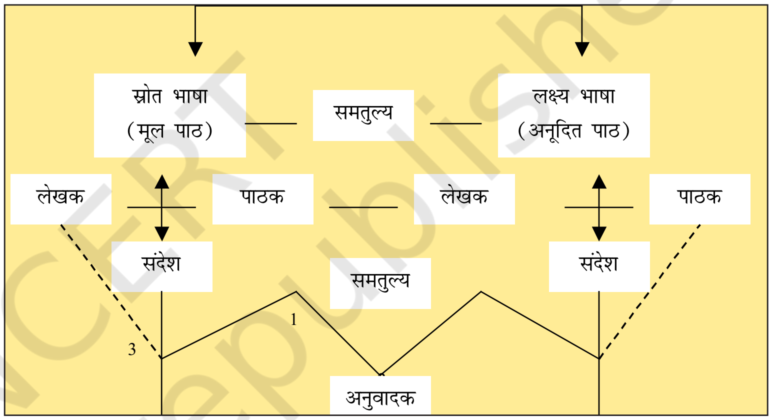

ऊपर अनुवाद की दो दृष्टियों की बात हुई है। आज विश्व स्तर पर साहित्य के अनुवाद की भी दो धाराएँ या दो स्कूल पहचाने जाते हैं। एक स्कूल की मान्यता है कि साहित्य का अनुवाद करते समय रचना को एक भाषा-संस्कृति से दूसरी भाषा-संस्कृति में प्रत्यारोपित करें। यह एक बहुत सृजनात्मक प्रक्रिया है, जिसमें अनुवादक को एक माली की तरह अपने दायित्व का निर्वाह करना होता है।

एक माली जब पौधे को एक जगह से उखाड़कर दूसरी जगह प्रत्यारोपित करता है तो उसकी कुछेक गैर ज़रूरी पत्तियाँ, शाखें और मुख्य जड़ के आस-पास फ़ैले रेशों के जाल को, जो प्रत्यारोपित पौधे के समुचित विकास में बाधा खड़ी करते हैं, कुशलतापूर्वक छाँट देता है। ठीक इसी तरह एक साहित्य का अनुवादक भी किसी रचना को एक भाषा-संस्कृति से दूसरी भाषा-संस्कृति में प्रत्यारोपित करते हुए स्रोत भाषा के मसौदे में इतनी छूट ले सकता है कि मूल रचना की आत्मा सुरक्षित रहे। इस प्रसंग में गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर का नाम विशेष रूप से याद आता है। उनकी जिस काव्यकृति '*गीतांजलि*' पर उन्हें नोबेल पुरस्कार मिला, उसके गीतों का मूल बांग्ला भाषा से अंग्रेज़ी में अनुवाद स्वयं गुरुदेव ने किया था। उन्हें भी वहाँ इसी पद्धति का अनुगमन करना पड़ा, क्योंकि बांग्ला कविता और अंग्रेज़ी कविता के स्वभाव में बहुत अंतर है।

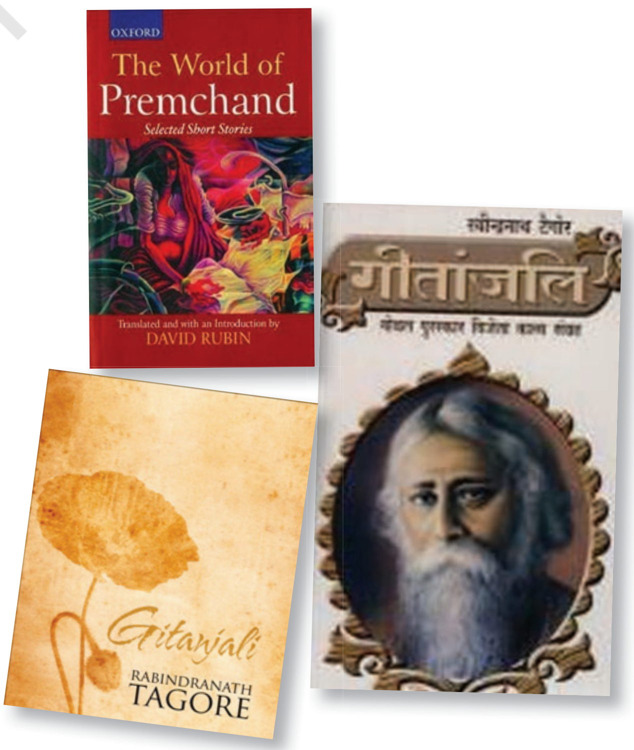

© NCERT not to be republished

III. भाषांतरण

अब हम कविता के अनुवाद के माध्यम से अनुवाद की प्रक्रिया पर बात करेंगे। कविता के अनुवाद को लेकर अनुवाद-विशेषज्ञों के बीच बहुत-सी बहसें दुनिया-भर में हुई हैं और जिस बात पर सर्वसम्मति बनी है, वह यह है कि कविता का अनुवाद सिर्फ़ कविता की बारीकियों को जानने वाले व्यक्ति को ही करना चाहिए। जो व्यक्ति कविता का प्रेमी नहीं है वह समझ ही नहीं सकता कि किसी कविता के शिल्प और उसकी काव्य-भाषा के साथ कविता-सुलभ संजीदगी से पेश न आने पर उसका मूल आशय या आत्मा नष्ट हो सकती है।

जापान के एक महान मध्यकालीन कवि हैं– बाशो (जन्म-1644), जिन्होंने जापानी कविता में 'हाइकू' छंद का पुनर्संस्कार किया। हाइकू तीन चरणों और 17 वर्णों का एक छंद है, जिसका लघु रूप दुनिया-भर की कविता में अब तक अनूठा माना जाता है। इसके पहले और तीसरे चरण में पाँच-पाँच और मध्यवर्ती दूसरे चरण में सात वर्ण होते हैं और प्रकृति इस छंद का प्रधान आलम्बन है।

बाशो का एक काल्पनिक चित्र

जापानी कविता में अब बाशो और हाइकू को एक दूसरे के पर्याय के रूप में याद किया जाता है। बाशो के जिस एक हाइकू का दुनिया की लगभग सभी विकसित भाषाओं में काव्यानुवाद हुआ वह इस प्रकार है–

फ़ुरूइका या	*ताल पुराना*
कावाजु तोबी-कोमु	*कूदा दादुर*
मिज़ु नो ओता	*गुड़ुप्*
(मूल जापानी पाठ)	***(हाइकू का हिंदी में काव्यानुवाद)***

एक पुराना तालाब उसमें
मेढ़क कूदा
मेढ़क के कूदने की पानी से निकली आवाज़।

(हिंदी में शाब्दिक अनुवाद)

ब्रेकिंग दि साइलेंस
आफ एॅन ऐंशिएंट पॉण्ड,
ए फ्रॉग जंप्ड इनटु वाटर
ए डीप रिज़ोनेन्स।

(एक पुराने तालाब की चुप्पी को तोड़ते हुए,
एक मेढ़क जल में कूदा। एक गहरी अनुगूँज या
हलचल।)

(व्याख्यात्मक काव्यानुवाद)

ऊपर बाशो के इस हाइकू के कई अनुवाद दिए गए हैं, पर यथार्थ रूपक नोबुयुकी के इस व्याख्यात्मक अनुवाद से ही खुलता है। कविता का मूल आशय जड़ता या जमाव को विखंडित करती गति से है। रूपक के अनुसार, एक पुराना जमा हुआ तालाब है, जिसमें कोई हलचल नहीं है। एक मेढ़क उसमें कूदता है और उसके कूदने से तालाब के जल में एक गहरी हलचल होती है।

© NCERT not to be republished

जब इस रूपक और मूल कविता के उद्घाटित अर्थ के आलोक में हम उपर्युक्त हिंदी काव्यानुवाद पढ़ते हैं, तो साफ़ होता है कि कविता का मूल आशय यहाँ ठीक तरह से रूपांतरित नहीं हो पाया। बल्कि कहीं-न-कहीं विपरीत अर्थ ही निकलता है, क्योंकि 'गुड़ुप' ध्वनि का जो चित्र संवेदना में उभरता है वह गतिशील न होकर गतिहीन और जीवनहीन है। किसी भी जीवित पदार्थ के जल में कूदने या गिरने से गुड़ुप की नहीं बल्कि 'छप्' या छपाक्' की ध्वनि उभरती है और जल में आवर्तन होता है। गुड़ुप् की ध्वनि तब होती है, जब कोई कंकड़ या छोटा ढेला पानी में डाला जाए। वैसी स्थिति में जल में गहरा आवर्तन नहीं होता।

एक कवि-अनुवादक का चातुर्य इसमें भी है कि वह 'गुड़ुप्' 'छपाक्' ध्वनियों के विवाद में न पड़ कर भी मूल कविता के निहितार्थ की रक्षा करे। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने उक्त हाइकू का अनुवाद करते हुए यही किया। उन्होंने मूल हाइकू के तीसरे चरण का बाँग्ला में अनुवाद किया 'जॅलेर ध्वनि' 'यानी जल की ध्वनि'। यानी मेढ़क के कूदने से जल में ध्वनि हुई, जल ध्वनित हुआ । वह ध्वनि कैसी है—क्या है, यह प्रत्येक व्यक्ति अपनी-अपनी तरह से परिभाषित-व्याख्यायित करने के लिए स्वतंत्र है। कविता-अनुवादक की मूल सफ़लता इस बात में है कि उसने लक्षित कविता के मूलार्थ की काव्यानुवाद में भरपूर रक्षा की।

इसी आशय से बाशो के इसी हाइकू का एक काव्यानुवाद यहाँ प्रस्तावित है। इसमें मूल कविता के आशय को सुरक्षित रखने के साथ-साथ हाइकू के छंद-विधान का भी ध्यान रखा गया है—

ताल पुराना
थिरक उठा, जब
कूदा दादुर

IV. पुनर्रचना

मूल रचना में जोड़-घटाव

किसी छंदबद्ध कविता का अनुवाद करते हुए प्रायः कवि-अनुवादक को कुछ जोड़ना और कुछ घटाना पड़ता है। बिना कुछ जोड़े-घटाए, किसी छंदबद्ध कविता का छंदबद्ध कविता में अनुवाद बहुत टेढ़ा काम है। इसमें प्रायः अनुवादक डगमगा जाते हैं। इस दृष्टि से प्रख्यात बाँग्ला कवि जीवनानंद दास की बहुचर्चित कविता '*बनलतासेन*' उल्लेखनीय है। बनलतासेन एक स्त्रीवाची नाम है। उसके आलम्ब से कविता का ऊपरी रूपाकार कवि ने एक प्रेम कविता जैसा रखा है, किंतु उसकी अंतर्वस्तु में यह कविता प्रेम से बहुत आगे बढ़कर परंपरा, इतिहास और आधुनिकता से टकराती हुई आगे बढ़ती है। मूल कविता छंद में है और हिंदी के कई वरिष्ठ व समकालीन कवियों ने इसका अनुवाद करने का प्रयास किया है। उनमें '*तारसप्तक*' के कवि स्व. भारतभूषण अग्रवाल द्वारा किया गया काव्यानुवाद महत्वपूर्ण है। काव्यानुवाद उद्धृत करने से पहले मूल कविता की एक आँशिक झलक दे देना उचित

© NCERT not to be republished

होगा। जीवनानंद दास की मूल कविता का पहला छंद यह है–

हज़ार वॅछर धरे आमि पथ हाँटितेछि पृथिवीर पॅथे,
सिंहल समुद्र थेके निशीथेर अंधकारे मलय सागरे;
अनेक घूरेछि आमि; बिम्बिसार अशोकेर धूसद जगते,
शेखाने छिलाम आमि; आरो दूर अंधकारे विदर्भ नगरे;
आमि क्लांत प्राण एक, चारिदिके जीवनेर समुद्र सफेन,
आमारे दु-दण्ड शांति दियेछिलो नाटोरेर बनलतासेन।

इसका शाब्दिक गद्य अनुवाद पहले देख लें–

हज़ार वर्षों से मैं पृथ्वी पथ पर चलता आ रहा हूँ/ सिंहल समुद्र से लेकर, रात्रि के अंधकार में, मलय सागर तक/ अनेक लोग मुझे घूरते रहे; बिम्बसार अशोक के धुंधले अस्पष्ट जगत में/ मैं था, और भी दूर अंधकारग्रस्त विदर्भ नगर में भी गया;/ मैं एक थका हुआ प्राणी, चारों ओर फेनयुक्त गरजता जीवन सागर/(तब) मुझे नाटोर की वनलता सेन ने दो पल का सुकून दिया था।

इसी क्रम में कविता आगे बढ़ती है और प्रत्येक पदबंध के अंत में टेक की भाँति 'नाटोरेर बनलता सेन' आवृत्ति होती है। इसका हिंदी में काव्यानुवाद करते हुए भारत जी ने एक ओर जहाँ मूल कविता की छंदोबद्धता को सुरक्षित रखा, वहीं मोटे तौर पर ही सही, कविता की विषयवस्तु को अक्षुण्ण रखने का भी भरपूर प्रयास किया है। देखें उनके काव्यानुवाद का पाठ–

"पृथ्वी-पथ पर चलते-चलते बीत चुके हैं वर्ष हजार
निशि के तम में मलय सिंधु तक घूमा सिंहल से लेकर बिम्बिसार,
विजयी अशोक का देखा है धूमिल संसार
उससे भी पहले तिमिरावृत वह विदर्भ का राजनगर,
क्लांत प्राण मैं, गूँज चतुर्दिक जीवन-सिन्धु हिलोर की
शांति दे गई थी दो पल बनलता सेन नाटोर की। ..."

यहाँ मूल पाठ से किंचित् छूटें ली गई हैं, मूल संवेदना भी संभवतः पूरी-पूरी काव्यानुवाद में नहीं सिमट पाई है। वस्तुतः इसे ही एक भाषा से दूसरी भाषा में कविता के अनुवाद की सीमा या विवशता मानना होगा। किसी भी कलारूप को यथावत् रूपांतरित नहीं किया जा सकता। पेंटिंग में भी मूल कलाकृति और उसकी प्रतिकृति या प्रिंट में इतना अंतर तो दिखाई देता ही है।

अंग्रेज़ी से हिंदी में अनुवाद करते समय दोनों भाषाओं की संरचनागत प्रकृति में अंतर के कारण बहुत बदलाव करने पड़ते हैं।

मूल रचना को बार-बार पढ़ना

कविता के अनुवाद की बुनियादी शर्त यह है कि जिस कविता का अनुवाद करना हो, उसे पूरी तरह हृदयंगम किया जाए। इसके लिए मूल कविता को कई-कई बार पढ़ना पड़ता है, उसके शीर्षक का, कविता के रूपक अथवा कथ्य के साथ, क्या तार्किक आधार है, कवि-अनुवादक को अपने मानस में स्पष्ट करना होता है। कई बार हम मूल कविता को एक दो बार पढ़ कर ही भ्रम पाल लेते हैं कि हमने उसे पूरी तरह समझ लिया और अति उत्साह में उसका अनुवाद करने लग जाते हैं। वैसी स्थिति में बड़ी चूक हो सकती है और अनुवाद में मूल कविता का अनर्थ हो सकता है।

© NCERT not to be republished

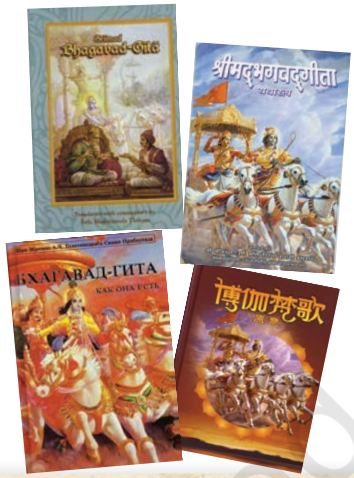

रचना के मूल उपागम की समझ बनाना

किसी भी रचना का अनुवाद करने से पहले उसे ध्यानपूर्वक पढ़ना और उसके मूल उपागम को समझना बहुत ज़रूरी होता है। कविता का मूल आशय समझने के बाद ही आप तय कर पायेंगे कि मूल पाठ और अनुवाद में कितना अंतर आ सकता है और लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुरूप कितना फेरबदल उसमें करना पड़ सकता है।

स्पेनिश भाषा में एक महाकवि हुए हैं–सेसर वाय्येखो। पेरू की उनकी नागरिकता थी। अंग्रेज़ी माध्यम से उनकी एक कविता का अनुवाद करते हुए अंतिम पदबंध में एक पहाड़ जैसी समस्या सामने आ खड़ी हुई, जिसे सुलझाने में मुझे कई वर्ष लग गए। और इसमें न डिक्शनरियाँ मेरी मदद कर पाईं, न मूल स्पेनिश कविता का टेक्स्ट, न ही स्पेनिश भाषा-विशेषज्ञ। उस समस्या को हिंदी की अपनी काव्य-परंपरा के अर्जित ज्ञान-भंडार की सहायता से ही मुझे सुलझाना पड़ा। सेसर वाय्येखो की मूल स्पेनिश कविता के 'दि एंगर दैट ब्रेक्स मैन इनटु चिल्ड्रेन' ('गुस्सा, जो आदमी को तोड़कर बच्चों में बदल देता है') शीर्षक वाले अंग्रेज़ी पाठ का अंतिम पदबंध इस प्रकार है।

The anger that breaks soul into bodies,
body into dissimilar organs
and organ into thought eights
the anger of the poor
has a central fire against two craters.

अनुवाद करते हुए शेष सब कुछ तो ठीक-ठीक निभता गया, लेकिन 'थॉट एट्स' पर आकर गाड़ी अटक गई। सारे विकल्प आज़मा लेने के बाद भी कई साल तक अटकी रही और 'थॉट एट्स' की गाँठ खुल नहीं पाई। और एक दिन अचानक सूरदास की पंक्ति 'आठ पहर बंसीवट भटक्यों, साँझ पहर घर आयो' गुनगुनाते हुए यक्बयक् खुल गई। इस 'आठ पहर' ने खोली 'थॉट एट्स' की गाँठ।

और तब जो हिंदी में अनूदित पाठ तैयार हुआ, वह यह है–

"...गुस्सा, जो रूह को तोड़ कर ढाँचों में बदल देता है
ढाँचे को असमान अवयवों में
और अवयवों को आठों पहर की चिंताओं में,
गरीब का वह गुस्सा
ज्वालामुखी के दो मुहानों के मुकाबले
एक केंद्रीय आग जितना विनाशकारी होता है।"

–एक कवि-अनुवादक का अनुभव

© NCERT not to be republished

गद्य का अनुवाद

When I was very young, I was suitably impressed to learn that, appearances not withstanding, the whale is not a fish. Nowadays these questions of classification move me less; and it does not worry me unduly when I am assured that history is not a science. This terminological question is an eccentricity of English language. In every other European language, the equivalent word to 'science' includes history without hesitation. But in the English-speaking world this question has a long past behind it, and the issues raised by it are a convenient introduction to the problems of method in history.

At the end of the Eighteenth century, when science had contributed so triumphantly both to man's knowledge of the world and to man's knowledge of his own physical attributes, it began to be asked whether science could not also further man's knowledge of society. The conception of the social sciences, and of history among them, gradually developed throughout the Nineteenth century; and the method by which science studied the world of nature was applied to the study of human affairs.

— History, Science, and Morality-E.H. Carr

हिंदी अनुवाद दिए जा रहे हैं –

(1)

जब मैं छोटा था तो मैं इस जानकारी से खासा प्रभावित हुआ था कि देखने में मछली जैसी लगने वाली ह्वेल दरअसल मछली नहीं होती। इस प्रकार के वर्गीकरण के प्रश्न अब मुझे कम प्रभावित करते हैं और जब मुझे यह विश्वास दिलाया जाता है कि इतिहास विज्ञान नहीं होता तो मैं ज्यादा परेशान नहीं होता। अंग्रेज़ी में पारिभाषिक प्रश्नों से उलझने की एक सनक है। दूसरी हरेक भाषा में इतिहास को बिना हिचक 'विज्ञान' के अंतर्गत स्वीकार कर लिया गया है। मगर अंग्रेज़ी भाषी दुनिया में इस प्रश्न की एक लंबी परंपरा बन गई है और जिन मुद्दों को इसने जन्म दिया है उनमें 'इतिहास पद्धति की समस्या' का प्रश्न आसानी से जुड़ गया है।

अठारहवीं शताब्दी के अंत में, जब विज्ञान की उपलब्धियों ने विश्व के बारे में और खुद आदमी की भौतिक विशेषताओं के बारे में उसके ज्ञान को बढ़ाने में एक बड़ी भूमिका अदा की थी, यह प्रश्न उठने लगा कि क्या विज्ञान समाज के बारे में आदमी का ज्ञान नहीं बढ़ा सकता? पूरी उन्नीसवीं शताब्दी में धीरे-धीरे सामाजिक विज्ञानों और उनमें इतिहास को शामिल करने की धारणा विकसित हुई। तभी से मानवीय व्यवहार का अध्ययन करने के लिए वह पद्धति अपनाई जाने लगी जिसे विज्ञान प्राकृतिक दुनिया का अध्ययन करने के लिए करता है।

(2)

जब मैं बहुत छोटा था, यह जान कर उचित ही प्रभावित हुआ था, कि एक जैसी दिखाई देने के बावजूद ह्वेल मछली की श्रेणी में नहीं आती। वर्गीकरण के इस तरह के प्रश्न अब मुझे कम ही विचलित करते हैं, और वह बात बहुत चिंतित नहीं करती, जबकि मुझे भलीभांति पता है कि इतिहास कोई विज्ञान नहीं है। पारिभाषिकता का प्रश्न अंग्रेज़ी भाषा का एक वहम है। यूरोप की अन्य सभी भाषाओं में 'विज्ञान' के समानार्थी जो शब्द हैं, निस्संकोच रूप से इतिहास उनमें समाहित है। किंतु अंग्रेजी भाषी दुनिया में यह प्रश्न लंबी अवधि से छाया हुआ है, और इसके द्वारा उठाए गए मुद्दों से इतिहास की पद्धतिगत समस्याओं को सहज ही समझा जा सकता है।

अठारहवीं सदी के अंत में, जब विज्ञान ने मानक के विश्व-ज्ञान-भंडार और उसकी अपनी शरीर-रचना संबंधी ज्ञान-राशि में बहुत ही उत्साहवर्धक योगदान किया, तो यह प्रश्न उभरना शुरू हुआ कि क्या विज्ञान, समाज संबंधी मानव-ज्ञान के विकास में भी योगदान नहीं कर सकेगा? उन्नीसवी सदी के दौरान समाज विज्ञानों, उन्हीं के अंतर्गत इतिहास की अवधारणा धीरे-धीरे विकसित होती रही है, और जिस पद्धति के विज्ञान ने प्राकृतिक जगत का अध्ययन किया, उसे ही मानवीय व्यवहार के अध्ययन कर लागू किया गया। ...''

– 'इतिहास क्या है?' ई.एच. कार
'इतिहास, विज्ञान और नैतिकता' अध्याय का पूर्वांश

© NCERT not to be republished

दोनों अनुवादों में रेखांकित अंशों पर ध्यान दें।

- *Suitably impressed* के लिए पहले अंश में 'खासा प्रभावित' तो दूसरे अंश में 'उचित ही प्रभावित' लिखा गया है। ये दोनों ही अनुवाद अर्थ को स्पष्ट करने में पूरी तरह समर्थ है।
- इसी तरह *Move me less* के लिए 'मुझे कम प्रभावित' (पहले अंश में) तथा 'मुझे कम ही विचलित' (दूसरे अंश में) का प्रयोग किया गया है। यहाँ पर दूसरा अनुवाद ज़्यादा ठीक लगता है क्योंकि लेखक के बड़े होने के साथ-साथ उसकी जानकारी बढ़ी है और अब उसे इतिहास और विज्ञान का फ़र्क पता है। इसीलिए पहले विचार से विचलन का प्रश्न ही नहीं उठता।
- eccentricity के लिए 'सनक' और 'वहम' शब्द का प्रयोग किया गया है। ये दोनों शब्द अंग्रेज़ी भाषा के संदर्भ में लिखे गए हैं किसी भाषा विशेष पर टिप्पणी करते हुए वहम शब्द का प्रयोग तो किया जा सकता है पर सनक शब्द का लिखा जाना उतना ठीक नहीं होगा। सृजनात्मक लेखन की तरह अनुवाद करते समय भी हमें ऐसे सख्त टिप्पणी वाले शब्दों या भाषा से बचना चाहिए जो किसी को ठेस पहुँचाते हैं।

इसीलिए एक भाषा से किसी अन्य भाषा में अनुवाद का प्रश्न काफ़ी जटिल है। इसका कोई एक पाठ नहीं हो सकता, क्योंकि अभिव्यक्ति के रूप एक से नहीं हैं। कविता का अनुवाद करते समय जो अनुवाद-पद्धति आदर्श हो सकती है, कहानी या नाटक का अनुवाद करते समय वही पद्धति आदर्श नहीं भी हो सकती है। सृजनात्मक पाठों का अनुवाद करते हुए जहाँ हमें व्यंजनात्मक पद्धति के निकट जाना होता है, वहीं वैचारिक और विश्लेषणपरक पाठ के लिए तथ्यात्मक पद्धति अपनानी पड़ती है। ई.एच.कार की सैद्धांतिक पुस्तक 'व्हाट इज़ हिस्ट्री' के संलग्न अंश का अनुवाद करते हुए इसी तथ्यात्मक पद्धति को आधार बताया गया है। ऐसा इसलिए किया गया क्योंकि इस पुस्तक में 'इतिहास' की अवधारणा पर सैद्धांतिक व विश्लेषणात्मक शैली से विचार किया गया है, जिसमें प्रत्येक शब्द का, वाक्यों अनुच्छेदों के क्रम का विशिष्ट किस्म का तार्किक महत्त्व है। पाठ के साथ छेड़छाड़ करने में अर्थ का अनर्थ भी हो सकता है। ऐसे पाठों का अनुवाद करते हुए एक ओर जहाँ अनुवादक के समक्ष शब्द, मुहावरे व अभिव्यक्तिगत बहुत विकल्प नहीं होते, वहीं उसके सम्मुख वह लक्ष्मण रेखा भी रहती है कि संबंधित विषय की बुनियादी जानकारी उसे हो और यह भी कि अनूदित पाठ में उसे एक ऐसी भाषा विकसित करनी है, जो मूल लेखक के आशय को आसान शैली में यथातथ्य रख दे। संलग्न अंश का अनुवाद करते हुए इन्हीं सतर्कताओं से गुज़रना पड़ेगा।

अनुवाद में भाषा, मुहावरे और सामाजिक संदर्भों की जानकारी

Now the feet of the dancers grow heavy

अब नर्तकियों के पैर भारी हो उठे हैं।

– नाइट ऑफ़ साइने, एल.एस. सेंगोर (प.अफ़्रीकी)
हिंदी अनुवाद

इस अनुवाद में दो गलतियाँ हुई हैं। एक डांसर को मात्र स्त्री समझने की। लोकनृत्यों में पुरुष और स्त्रियाँ साथ-साथ नृत्य करते हैं। दूसरी-हिंदी मुहावरे की जानकारी का न होना। यह मुहावरा उन स्त्रियों पर प्रयुक्त होता है जो गर्भवती होती हैं। यदि पहली गलती यानि डांसर्स को नर्तकियों के बजाय नर्तक भी माना गया होता तो फिर दूसरी गलती यानि गलत

मुहावरा भी न आता। यहाँ पर अंग्रेज़ी भाषा का अज्ञान, अफ़्रीकी लोक संस्कृति का अज्ञान और हिंदी मुहावरों का अज्ञान एक साथ दिखाई पड़ रहे हैं। एक और उदाहरण देखें–

Let the rail-splitters awake.
पाब्लो नेरुदा (चिली)
रेल-भंजकों को जगने दो
(हिंदी अनुवाद)

यह कविता मूल रूप से चिली के उन विद्रोही लकड़हारों के संदर्भ में लिखी गई थी, जो बड़ी-बड़ी कंपनियों से जुड़े थे और शोषण एवं दमन के शिकार थे। अंग्रेज़ी में रेल शब्द के कई अर्थ हैं, जिनमें से एक छड़, डंडा या लट्ठा भी है। यहाँ आशय लकड़ी के बड़े-बड़े लट्ठों को आरे से चीरने वाले श्रमिक बढ़इयों से है। हिंदी अनुवाद में उसे रेल हड़तालों के दौरान रेल की पटरियाँ उखाड़ने वाले आंदोलनकारियों से जोड़ दिया गया है।

भाषिक स्तर पर कविता को 'शब्दों का खेल' भी कहते हैं और हर भाषा के शब्दों का अपना भिन्न स्वभाव होता है, भिन्न अर्थ होता है। बाँग्ला भाषा में प्रेम की उत्कटता के लिए 'भीषण' विशेषण प्रयोग किया जाता है, जबकि हिंदी में 'भीषक' शब्द का स्वभाव सर्वथा भिन्न है। प्रेम की उत्कटता के संदर्भ में तो उसका प्रयोग नहीं ही होता। इसी तरह बाँग्ला में एक शब्द है 'भालोबाशा'। भालोबाशा को साथ-साथ लिखने पर उसका अर्थ होता है 'प्रेम', और जब 'भालो' अलग व 'बाशा' अलग लिखे हों तो अर्थ होगा– 'अच्छा घर'। इस तरह कविता के अनुवाद में एक ओर जहाँ मूल कविता के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, भौगोलिक व भावात्मक पूर्वापर संदर्भों को समझना ज़रूरी होता है, वहीं स्रोत भाषा व लक्ष्य भाषा के विविध स्तरों का पूरा व पक्का ज्ञान भी काव्यानुवाद की एक प्रमुख शर्त है।

अनुवाद में रूपांतरण का एक नमूना–'द्रौपदी स्वयंवर' मध्यप्रदेश की गोंड शैली का चित्र (जनसत्ता से साभार)

अनुवाद के पूर्व तैयारियाँ

पहले ही उल्लेख हो चुका है कि अनुवाद-कर्म में दो भाषाएँ निहित होती हैं—एक मूल या स्रोत भाषा और दूसरी लक्ष्य भाषा, और यह भी कि अनुवादक का इन दोनों पर पूरा अधिकार होना चाहिए। नहीं है, तो उसे अर्जित करना होगा। किंतु काव्यानुवाद में संलग्न अनुवादकों की ज़रूरतें इतने भर से नहीं पूरी हो जातीं। दोनों भाषाओं पर पूरा अधिकार अर्जित करने के साथ-साथ उन्हें अपनी स्मृति में लक्ष्य भाषा के समानार्थी और विलोमार्थी शब्दों का एक व्यापक शब्द-भंडार विकसित और सुरक्षित करना होता है, क्योंकि मूल या स्रोत भाषा की कविता में एक ही भावाभिव्यक्ति की अनेक अर्थ-छवियाँ हो सकती हैं, बल्कि कहें कि होती हैं। उन सबको अनूदित पाठ में तब तक नहीं उतारा जा सकता, जब तक कवि-अनुवादक की स्मृति में एक वृहत् शब्द-भंडार सुरक्षित न हो। उसी में से उसे विविध अर्थ-छवियों के अनुरूप स्वविवेक से शब्दों का चुनाव करना होता है। इसके साथ ही लक्ष्य भाषा की लम्बी साहित्य परंपरा को भी अनुवादक को हृदयंगम करना होता है। बड़े कवियों और गद्यकारों ने परंपरा में सुरक्षित जो भाषा विकसित की, जो विशिष्ट मुहावरे सृजित किए, अनूदित रचना की सौंदर्यवृद्धि में उनसे सहायता मिलती है। कभी-कभी मूल या स्रोत भाषा के पाठ की कूट अभिव्यक्तियों को खोलने में भी परंपरा से अर्जित वह ज्ञान-भंडार हमारी बड़ी सहायता करता है। अनुवाद करते समय ऐसी तमाम बारीकियों पर हमें ध्यान देना पड़ता है। सृजनात्मक लेखन का अनुवाद हो या तथ्यात्मक गद्यांशों के अनुवाद दोनों ही स्थितियों में संदर्भ के अनुसार उचित शब्दों का प्रयोग, भाषायी संदर्भों के प्रति सचेतता तथा अनुवाद किए जाने वाले अंश को संपूर्णता में समझ कर अनुवाद करना ही ठीक होगा। इसी अर्थ में अनुवाद शुरू से अंत तक सृजनात्मक प्रक्रिया है।

देखें गतिविधि/Activity 24 पृष्ठ 155

गांधी जी के इन तीन बंदरों की नयी बातों को अंग्रेज़ी में अनुवाद करके देखें।

गतिविधि–25 Activity–25

कहा जाता है कि अनुवाद में मूल खो जाता है लेकिन विश्व की महत्वपूर्ण रचनाओं तक हम अनुवाद के द्वारा ही पहुँच पाते हैं और पढ़ने का मज़ा भी लेते हैं। आप ऐसी रचनाओं की सूची बनाइए जिनको आपने और आपके साथियों ने अनुवाद के माध्यम से ही (विश्व और भारतीय स्तर पर) ही पढ़ा है।

It is said that something is lost in translation. But it is also true that, it is only through translation that the world of literature has been made available to people across the globe. Make a list of those books which are read only in translation. (Both Indian and world literature)

© NCERT not to be republished

कार्यशाला में विद्यार्थी के द्वारा किए गए अनुवाद के नमूने

Me—An Exchange Student?

Could I, too, be an exchange student? The idea sounds frightening yet tempting at the same time. It would be unrealistic if you were not afraid at all, but the most important thing is that you want to go for it and that your expectations lie within reasonable limits.

मैं—एक बदला हुआ विद्यार्थी

क्या मैं भी एक बदला हुआ विद्यार्थी हो सकता हूँ। यह सुनने में बहुत ही अटपटा लगता है फिर भी लुभावना है। यह बहुत ही गलत होगा अगर हम कहें कि हम बिलकुल नहीं डरते, परंतु सबसे महत्वपूर्ण चीज़ यह है कि हम सब ऐसा बनना चाहते हैं और हमारी उम्मीदें हमेशा एक सही सीमा के तहत ही रह जाती हैं।

मैं—सांस्कृतिक आदान-प्रदान की छात्रा

मैं भी एक सांस्कृतिक आदान-प्रदान की छात्रा बन सकती हूँ? यह विचार डरावना है परंतु साथ-ही-साथ लुभावना भी है। यह सच नहीं होगा अगर आपको बिलकुल डर ना लगे। परंतु सबसे ज़रूरी है कि आप यह करना चाहते हैं और आपकी अपेक्षाएँ सीमित हैं।

मैं भी एक 'एक्सचेंज छात्र'

क्या मैं भी एक 'एक्सचेंज छात्र' (एक्सचेंज छात्र —विदेश में किसी मेज़बान परिवार के साथ रह कर पढ़ाई करता है, जिसकी अवधि ज़्यादातर एक वर्ष होती है।) हो सकता हूँ? यह खयाल भयभीत करने वाला लेकिन लुभावना भी है। ये असत्य नहीं होगा अगर बिलकुल भी डर न लगे। परंतु सबसे आवश्यक चीज़ यह है कि आप जाना चाहते हैं और आपकी उम्मीद सीमा के भीतर है।

मैं—मिलान केंद्र की विद्यार्थी

क्या मैं भी मिलान केंद्र की विद्यार्थी बन सकती हूँ। विचार कुछ जोखिम भरा-सा तो है पर बहुत लुभावना भी है। यह बात सोच के एकदम परे होगी, अगर इस विचार से आप ज़रा भी भयभीत नहीं हुए। जो भी हो महत्वपूर्ण बात तो यह है कि आप भी इसके लिए इच्छुक होगें और आपकी अपेक्षाएँ उचित सीमाओं के भीतर ही होंगी।

मैं—एक पलायन विद्यार्थी

क्या मैं भी एक पलायन विद्यार्थी हो सकती हूँ। इस तरह का विचार कभी-कभी डरावना सा लगता है व उसी समय यह विचार लुभावना भी लगता है। यह वास्तविकता न भी हो फिर भी डर-सा लगता है लेकिन फिर यह विचार महत्वपूर्ण हो जाता है कि तुम अपनी सीमाओं से परे तथा आशाओं की सीमा में रहते हो।

➡ *अंग्रेज़ी के उपर्युक्त अंश को एक कार्यशाला में कई विद्यार्थियों ने अपने-अपने ढंग से अनूदित किया। इसे पढ़िए और कक्षा में चर्चा कीजिए कि इसमें शब्द चयन, वाक्य संरचना, भाषागत परिवर्तन का कहाँ तक ध्यान रखा गया है। सभी अनुवादों का विश्लेषण करते हुए अपनी राय भी लिखिए।*

© NCERT not to be republished

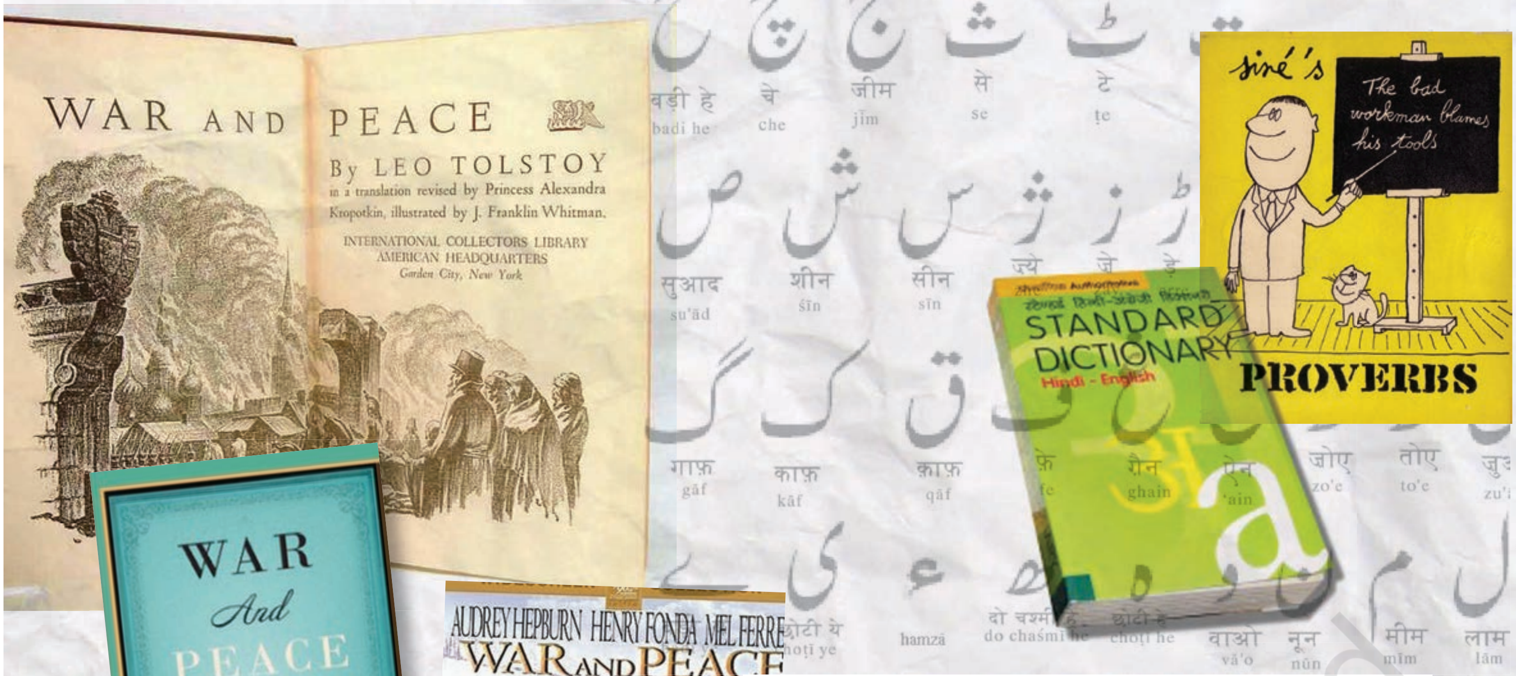

Understanding Translation

Translate the following instructions into English.
Form groups and do the activity described below.

- अपने विद्यालय के पुस्तकालय में जाइए। प्रत्येक समूह अपनी रुचि के अनुसार कम-से-कम दस ऐसी रचनाएँ चुने जिनमें कविता, कहानी, एकांकी आदि शामिल हों।
- सभी समूह मिलकर इनमें से अनूदित रचनाओं की एक सूची बनाएँ।
- आपके इस चयन में कितनी अनूदित रचनाएँ हैं?
- आपके अनुसार क्या ये पर्याप्त हैं?
- अपने पुस्तकालय अध्यक्ष को कुछ और अनूदित रचनाएँ मँगवाने का सुझाव दीजिए।
- इनमें विभिन्न भारतीय भाषाओं से अंग्रेज़ी और हिंदी में अनूदित रचनाएँ भी शामिल हों।

© NCERT not to be republished

I. An Introduction

A good translation is one that has an existence independent of the original.

Translation essentially implies transference of material from one language into another and literary translation is quite close to creative writing. Translation as a creative activity encompasses the process and the product. However, there is always a first text involved in translation and hence the process of translation produces a written or spoken text in a different language while retaining the original meaning. The original text is called the Source Text (ST). The translated text is called the Target Text (TT). Similarly, we have the Source Language (SL) and the Target Language (TL).

For a translator, knowledge of two or more languages is essential. This involves not only a working knowledge of two different languages but also the knowledge of two linguistic systems as also their literature and culture.

You must have come across the word 'translating the idea'. When you convert an idea or a theory into practice, it is translating the idea. In science, social science and maths you translate the idea everyday. How close is that meaning to what we are discussing here? Discuss in the class.

Translation in a Multilingual Nation

Translation is almost a natural activity in a multilingual country like ours. We just switch from one language to another without taking recourse to translation. The reality is that usually we are not equally competent in all languages. Hence, there are times we struggle to find words in one language and are forced to think of them in another and then to translate them into the language of immediate communication. Thus, any multilingual situation calls for translation.

Look at the rupee note given here and see the number of languages and scripts that are represented on it. All the languages on the currency note convey the same information.

How many language can you say thank you in?

© NCERT not to be republished

Basic Types of Translations

Intra-lingual translation is not just a possibility but a necessity in many languages with a long history, where the language has changed considerably. Let us take the example of William Shakespeare's plays. They were originally written in old English and have now been re-written in contemporary English.

Given below is a passage from Shakespeare's *Hamlet*. It is followed by an intra-lingual translation into contemporary English by Jonnie Patricia Mobley. Read the two passages carefully.

So excellent a king, that was to this
Hyperion to a satyr, so loving to my mother
That he might not beteem the winds of heaven
Visit her face too roughly.

(Act I, scene II)

So excellent a king! He was to this king
As the sun god is to a goatish beast; so loving to my mother,
He would allow the winds of heaven
To blow too roughly on her face.

What changes has the translator made? Are the changes only in terms of words? Discuss in groups.

The other kind of translation is the translation of a text from one language into another. This **inter-lingual translation** is not only common but necessary if the people of the world have to understand each other. Given below is an example of inter-lingual translation of an extract from a story दिल्ली में एक मौत (*A Death in Delhi* written by Kamleshwar translated by Gordan C. Roadarmel).

चारों तरफ़ कोहरा छाया हुआ है। सुबह के नौ बज चुके हैं, लेकिन पूरी दिल्ली धुन्ध में लिपटी हुई है। सड़कें नम हैं। पेड़ भीगे हुए हैं। कुछ भी साफ़ नहीं दिखायी देता। ज़िंदगी की हलचल का पता आवाज़ों से लग रहा है। ये आवाज़ें कानों में बस गई हैं, घर से हर हिस्से से आवाज़ें आ रही हैं।

A shroud of fog covers everything. It is past nine in the morning, but all of Delhi is enmeshed in the haze. The streets are damp. The trees are wet. Nothing is clearly visible. The bustle of life reveals itself in sounds, sounds which fill the ears. Sounds are coming from every part of the house…

Do you want to do your own translation? You can try. Now Compare yours to the original. You could write the meaning of every word, and then frame to translate it.

© NCERT not to be republished

Given below is a translation of an extract of a poem '*Buddha*' by Kedarnath Singh that has been translated by Anamika.

पानी भूल गया है
आग से अपना रिश्ता
आग को याद नहीं हवा का स्पर्श
हवा बहती है गंध से कटी कटी
गंध से टूट गई है
पृथ्वी की लय
पृथ्वी से बंद है
आकाश की बातचीत...

Water does not recall
Its bondage with the fire
Fire is out of touch with the air
Cut off from aroma the wind blows
Broken with the aroma
The earth's rhythm
Closed with the earth is
Dialogue with the sky...

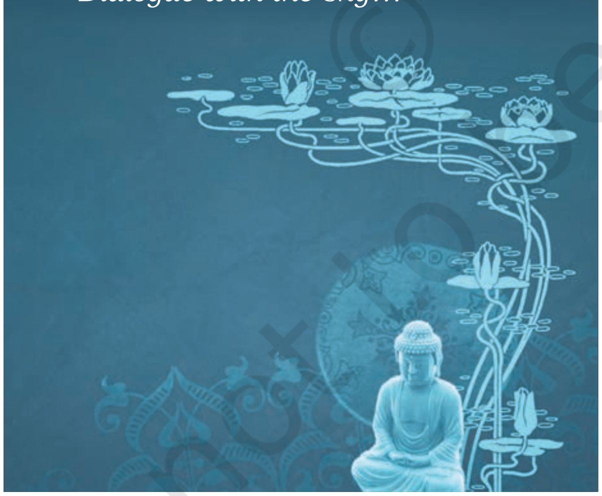

Discuss whether the meaning of the original poem has been captured in the translation or not. Would you like to replace any word. If so, why?

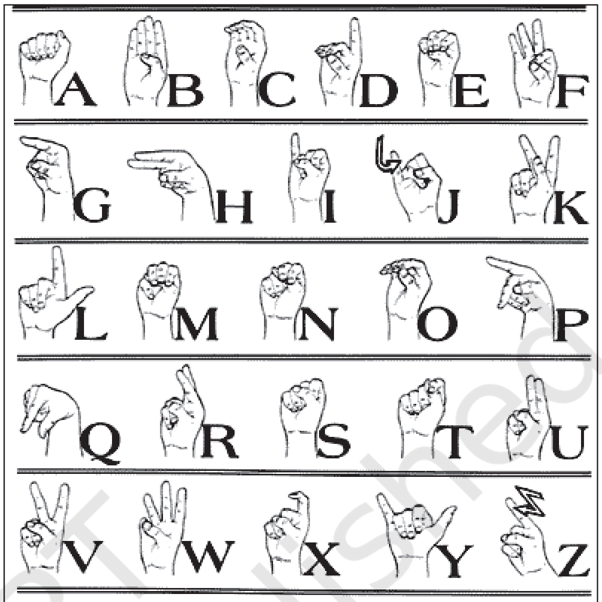

Sign language (English)

Have you ever used sign language to communicate with someone who cannot hear or perhaps understand your language? Or, have you learnt and performed in any dance form, or watched one? Or, have you seen a movie version of a play or a novel, or of an epic, or of a comic book? Have you ever drawn graphs or diagrams to illustrate facts and figures? You may not immediately think of any of these activities as translation but they all are. The first two are different ways of communicating your thoughts in one language through your body and accepted sign systems. The third example, of cinematic rendering, too is a translation into a different communication system, as is the case of graphs or diagrams. All this is known as **inter-semiotic translation**.

The three basic types of translations: intra-lingual, inter-lingual, and inter-semiotic—help us understand each other.

© NCERT not to be republished

Translation should fulfil the same functions as the original texts but in a different language. So, if an advertisement in English tries to persuade consumers to buy a particular brand of toothpaste, so should its translation in Hindi.

The aim of translation of scientific text is to give exact information. In the case of a literary text, its translation should read like a literary text in the target language or people will think that the original must have been very poorly written. While you may have illustrations in all these, and sometimes the illustrations have to be changed as well in keeping the target culture, it is the language that we are concerned with at the moment.

The debate in translation is how closely one must translate the original text. The extreme positions are those of literal translation, and creative or free translation. In the first, you translate every word in the original and in the second you rewrite the original text in a different language without bothering to translate every word, so long as you can carry the sense across. In its most extreme form, this is called transcription—you translate the literary text to read like it were written originally in the target language. Whether you believe in a word for word translation or a sense for sense translation, you have to deal with language; you have to know both languages well, and you have to understand the meaning of the original text. This means that a translator has to have a good vocabulary to begin with—in two languages!

The Process of Translation

There are two approaches to translation, which are known as the product approach and the process approach. Earlier translations were done keeping the product, i.e., finished translation in mind. The focus was how far the textual material in source language has been replaced by the target language equivalents. Whereas, the process approach urges the translators to understand the nuances, the culture, the language and the grammar of the source language and then produce their work, i.e., the translated text.

A scene from the film 'Kabuliwala' (1956) directed by Tapan Sinha

How many films (or television serials) can you name which are based on literary texts? Have you seen any? What did you think of the movie versions? Can you think of the major changes that occurred in translation? Were the changes because of the difference in medium or was it because of a difference in interpretation?

A poster of the film

© NCERT not to be republished

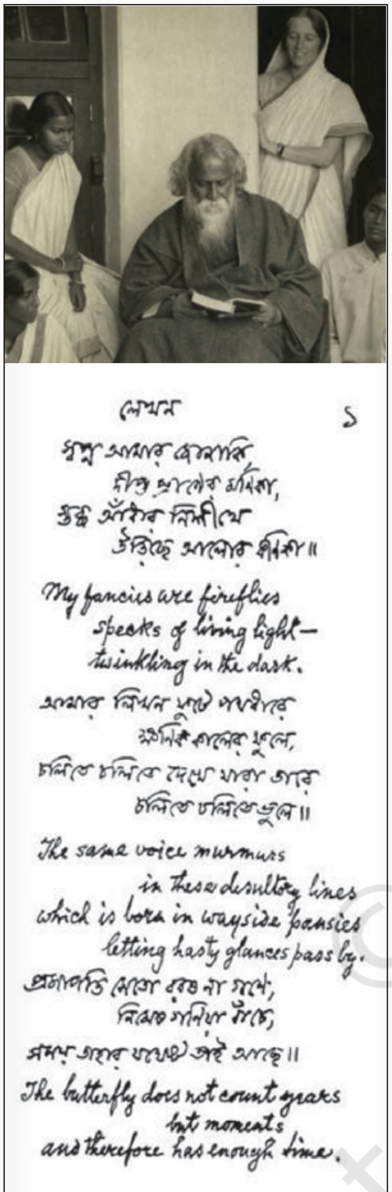

A poet's felicity in two languages

> *'True art selects and paraphrases, but seldom gives a verbatim translation.'*
>
> — ***Thomas Bailey Aldrich***

The process of translation involves three steps: analysis, transference and restructuring. Therefore, the translator has to go through this process i.e., of a good reader. It is imperative to read the original text carefully. As a bilingual person, one has to find the words and expressions that are most suitable. Then, as a writer, one restructures the text into the target language. So, it can be said that the translator first decodes and analyses the original text to understand the message as a reader and then restructures it as a creative writer. The process of translation thus involves understanding a text completely, in all its parts. This is also called deverbalisation or decoding. Once you have understood the text completely you rewrite it in the target language. This is called recoding. The process can also be seen as one of analysis (of the SL text), transfer (of meaning), and restructuring (in the TL). This is the diagram of the process as given by a famous Translation Theorist Eugene Nida:

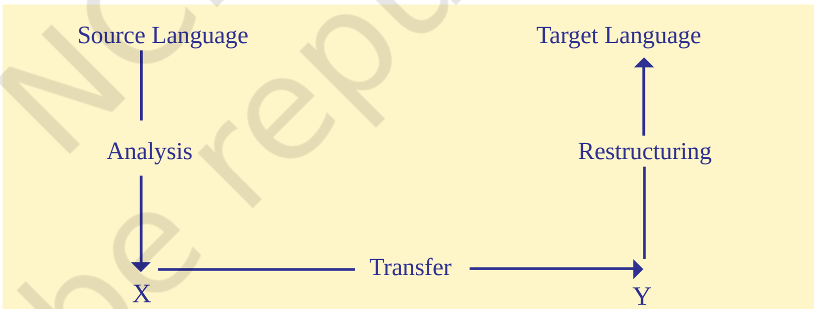

II. Analysis

The process of analysis involves reading the text thoroughly i.e., comprehending the text and drawing inferences. It also requires understanding the language, grammar, referential commutative meaning and also the socio-cultural nuances.

In effect, you analyse the original to see underlying meanings that are generated in the words used, thinking those meanings through to another language, and expressing those meanings paying due regard to the rules of the other language. Thus, you attempt to generate a

© NCERT not to be republished

text that is equivalent to the original in that it has similar effect on its audience as the original had on its. So there should be a correspondence in meaning between the translation and the original. To be able to do this, the translator must have competence in both the languages. A translator must have a good command of grammar as well as a large vocabulary, and must also be good at interpretation—should understand what is implied. He or she must also understand the socio-cultural nuances of the text.

III. Transference

Two things must be kept in mind in order to understand the process of message transference; that there is no one-to-one relationship between the grammatical and lexical units of the two languages (SL and TL). Each language has its own grammatical and lexical structure. Secondly, transference requires bilingual competence, i.e., ability to understand and articulate the same message in the two languages (SL and TL).

The translator must also know why a text is being translated. Texts which are informative and/or persuasive and are meant to be so even in translation. These need to be translated to read as if they were written originally in the Target Language. However, other texts (including literary texts) can be translated in different ways. You can try to retain the style of the original even if it sounds or reads strange in the TL. You can choose to foreignise or domesticate the SL text, i.e., translate it in such a manner that a reader immediately knows that it is a translation, or make it read so much like other texts in the TL that the reader does not realise it is a translation. This is a choice that the translator has to make. You have to know the function of the SL text, the intended function of the TL text and then proceed with your translation.

Some concepts or words are un-translatable. One has to cope with untranslatability in different ways—by paraphrasing or explaining the concept, by adapting,

गतिविधि–22 Activity–22

कई बार एक ही प्रकाशन समूह के हिंदी और अंग्रेज़ी अखबारों में एक ही खबर अनुवाद के रूप में भी दी जाती है। ऐसी दस खबरें अपने पोर्टफ़ोलियो के लिए चुनिए और इनका अनुवाद स्वयं भी कीजिए।

Very often we come across the same news in Hindi and English. Collect such news items for your portfolio. Try to translate the news items yourself and put these translations in your portfolio.

See गतिविधि/Activity 23 on Page 129

'The process of translating comprises in its essence the whole secret of human understanding of the world and of social communication'.

— Hans Georg Gadamer

© NCERT not to be republished

by creating a new expression (called a calque), by word for word translation ("dining leaf" for the Tamil "*sappattu ilai*"), by borrowing ("*Baaraat*"), or by compensation (using elements from the TL to overcome the loss of meaning—e.g., the bridegroom's party arrived in a *Baaraat*, a procession to the wedding).

IV. Restructuring

The creation of the text in the target language involves restructuring. Since word to word translation is not possible. Therefore, one must focus on the meaning. At the same time keep in view the cultural nuances and grammar of both the languages. It also involves the personalities of two writers—the writer of the original text and the writer of the translated text. The creation of a text is always done for the reader. The translator must render the original text in such a way that it should be as close to the original as possible and is communicable to its reader. And, it should read like a contemporary piece of writing.

The following diagram from Nida clearly depicts the three functions that the translator has to perform in the process of translation.

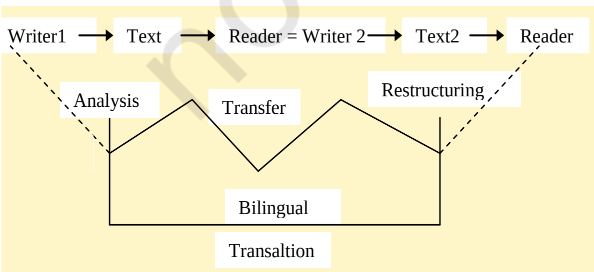

Understanding Translation

Here is a passage from Premchand's story '*Idgah*' originally written in Hindi. Its translation by Nandini Nopany and P. Lal into English is also given below.

चिमटा कितने काम की चीज़ है। रोटियाँ तवे से उतार लो, चूल्हे में सेंक लो। कोई आग माँगने आवे तो चटपट चूल्हे से आग निकालकर उसे दे दो। अम्माँ बेचारी को कहाँ फ़ुर्सत है कि बाज़ार आएँ, और इतने पैसे ही कहाँ मिलते हैं। रोज़ हाथ जला लेती हैं। हामिद के साथी आगे बढ़ गए हैं। छबील पर सब-के-सब शर्बत पी रहे हैं। देखो, सब कितने लालची हैं। इतनी मिठाइयाँ लीं, मुझे किसी ने एक भी न दी। उस पर कहते हैं, मेरे साथ खेलो। मेरा यह काम करो। अब अगर किसी ने कोई काम करने को कहा, तो पूछूँगा। खायें मिठाइयाँ, आप मुँह सड़ेगा, फोड़े-फुन्सियाँ निकलेंगी, आप ही ज़बान चटोरी हो जायेगी। तब घर के पैसे चुरायेंगे और मार खायेंगे। किताब में झूठी बातें थोड़े ही लिखी हैं। मेरी ज़बान क्यों खराब होगी??

A pair of tongs is such a useful thing. The chapatti can be taken out of the tawa *and finished on the hearth. If someone comes asking for hot coals, they can soon be taken out from the fire and given.*

© NCERT not to be republished

Grandma has no time to come to the market, and then there is not enough money. Everyday she gets her hands burnt. Hamid's friends have gone ahead and are drinking sherbet *at a stall. How greedy all these fellows are! They bought such a quantity of sweets but no one cared to offer him anything. And then they wanted him to play with them and to attend to their odd jobs. Now if any of them asks him to do something for them, he will know what to say. Let them eat their sweets— they will only spoil their mouths and get boils and pimples and become more and more greedy. They will steal money from their homes and get beaten for it. What the books say after all is not at all false. He will not let himself come under such fellows' bad influence.*

Analysis of the passage

Let us analyse how the translator has translated most of the words and phrases. *Chulhe* is translated into 'hearth' and not stove; later *Chulhe se aag* is translated as 'fire'. When the word *aag* is used again, it is translated into 'hot coals'.

Can you think of any reasons as to why *roti* is not translated into its English equivalent, i.e., Indian bread? The Hindi word *chapatti* is used instead in the English script.

Similary, *tawa* is not pan or girdle probably because of the difference in shape of the pan and the *tawa*. As we have seen in the passage the words such as *roti*, *chullah* have been used by the writer. The translator could have used the word 'Indian bread' for *roti*, but he didn't use it because it would not have conveyed the exact meaning. For *chullah* the nearest substitute is hearth and not 'stove' or 'girdle' and would not have conveyed the meaning.

Sherbet is not translated as Juice but is retained as *sherbet* perhaps because it goes with the kind of place that is depicted in the story.

You may also note that while the first person is used in *मुझे किसी ने एक भी न दी* in the hindi version, in English the third person is used—no one cared to offer him anything. *Mere saath khelo* becomes— they wanted him to play with them and *mera yeh kaam karo* is attend to their odd jobs, *to poochunga*—he will know what to say.

It is very interesting to note how the translator has not given the word-to-word translation in some places but has been successful in retaining the feel of the original.

aap hi zaban chatori ho jayegi—become more and more greedy.

meri jaban kyon kharab hogi—He will not let himself come under such fellows' bad influence.

Now translate the same passage and see if there are changes in your version.

But what about other elements in the original text? How does one translate rhythms and rhymes and other sound patterns and create similar poetic effects in a different language? This brings us to the specific pleasures and challenges of translating poetry.

Translating Poetry

To translate a poem you need to know how to read poetry. You have to read the poem aloud, learning to breathe right, to pause at the right points, to get the rhythm, to get the sound pattern of the poem. You have to understand how the poem is constructed—the beats, the grammatical structure, the tenses, the use of adjectives, the use of imagery and symbols, and the way meaning is conveyed through in direction and suggestion. The challenge of translating poetry is immense but it can be done and done wonderfully. We read Pablo Neruda in translation and the genius of the poet is not lost. He originally wrote in Spanish. Read an excerpt from the poem *Keeping Quiet* translated by Alastair Reid.

In the poem, Neruda talks about the necessity of quiet introspection and creating a feeling of mutual understanding among human beings.

Now we will count to twelve
and we will all keep still.

For once on the face of the Earth
let's not speak in any language,
let's not stop for one second.
and not move our arms so much...

Here is a poem '*एक पुष्प की अभिलाषा*' *(A Flower's Wishes)* by Makhanlal Chaturvedi, the poem was written in Bilaspur prison, and glorifies the spirit of sacrifice and martyrdom for the sake of the motherland.

स्मारक आवरण

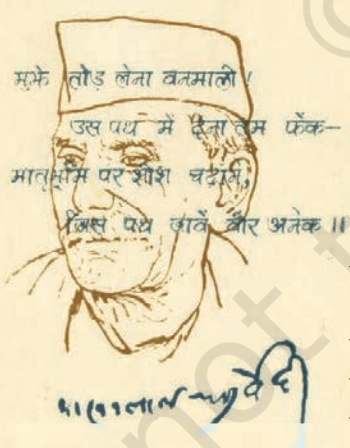

चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गुथा जाऊँ
चाह नहीं प्रेमी माला में बिंद कर ललचाऊँ
चाह नहीं सम्राटों के शव पर है हरि डाला जाऊँ
चाह नहीं देवों के सिर चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ
मुझे तोड़ लेना बनमाली उस पथ पर देना तुम फेंक
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ जाते वीर अनेक

I crave not to be woven in the wreaths of celestial maidens;
I crave not to allure the beloved arrayed in the lovers garland;
I crave not to be placed, O God! on the coffins of monarchs;
I crave not to be strewn on the deities' heads and swagger on my fortune.
Pluck me, O Gardener! Throw me on the path
On which go the many gallants
To offer their heads for their motherland.

Translated by Shaileshwar Sati Prasad

© NCERT not to be republished

Analysis of the Poem

Chah Nahin is used to express a strong desire or feeling, therefore, the translator has used the word 'Crave'. Similarly, in the context of the poem '*Surbala*' refers to 'celestial maidens', which are considered epitome of beauty and their using the flowers for beatification enhances the importance of flowers.

You may also note that the translator has used the subject 'I' in the beginning of the sentence and has still maintained the rhythm of the original where the poet has used the words—'*chah nahin*'.

Before you start translating the poem, read about the poet, his/her socio-cultural background, try to figure out what must the poet be thinking when he/she wrote this poem. Is there any imagery or language that is repeated? Does it symbolise something or some aspect of life. It will help you understand the nuances of the poems.

Remember that the translation of a poem will read differently from the original because sound systems and grammar will differ. You will also have a different prosody. Your perfect word-to-word equivalence is not possible. While translating the poem stay as close to meaning as possible. A direct translation of the poem will fail. If you doubt getting the meaning of a word/phrase, try to give an equivalent. Remember, you are giving your readers the poem to enjoy. Your work does not end here. After translating the poem, take some time to rethink and then come back and see where you can fill the gaps to improve.

Translating a poem is not less creative than writing a poem because you have to feel the emotion, understand the idea and share the culture.

Edward FitzGerald translated The *Rubaiyat* of *Omar Khayyam* in English.
He rewrote and re-ordered some of *Khayyam's* verses thus creating a new poem.
Rubaiyat is the Persian word for quatrains.

The first Edition Version, 1859

Awake! For Morning is the Bowl of Night.
Has flying the stone that puts the Stay to Flight
And Lo! the Hunter of the East has caught
The Sultan's Turrent in Noose of Light.

Fourth Edition, 1879

Wake! for the Sun, who scatter'd into flight
The starts before him from the Field of Night,
Drives Night along with them from
Heav'n and stries
The Sultan's Turrent with a shaft of light.

Which stanza according to you reads better and why? Have a discussion in the class.

The above stanza can be interpreted as:

Awaken from the unawareness you have been 'educated' into and let the dawn of awareness strangle the arrogance of mere knowledge. Let the strong light of wisdom, gentle at first, irradiate your consciousness.

© NCERT not to be republished

Translating Dialogues

This takes us to the specific problem of translating the spoken word. As you know, we may all speak the same language but we speak it differently—not only our accents but also our vocabulary and sometimes even our grammar differ from each other's because of the region we come from. We may also speak different dialects of the same language. In a play, as in a short story, or even a poem, it is usually important to maintain different speech patterns for different characters. How does one achieve this in translation? First of all, we must ensure that the spoken text from one language does seem to be a spoken text in the other. When we translate dialogues, they must appear to be so in the TL text. Chandradhar Sharma Guleri's story '*उसने कहा था*' (She had said) has powerful dialogues that make the story come alive. The following dialogues have been translated. Read and see whether the translated dialogues have been able to translate the nuances of the language.

A scene from the film adaptation of the story by Moni Bhattacharjee

"मुझे पहचाना?"
"नहीं।"
"तेरी कुड़माई हो गई?...धत्...कल हो गई... देखते नहीं रेशमी बूटों वाला सालू... अमृतसर में... "
भावों की टकराहट से मूर्छा खुली। करवट बदली। पसली का घाव बह निकला।
"वजीरा, पानी पिला।" उसने कहा था।...

"Do you recognise me?"
"No."
"Are you engaged–Hush–yesterday- can't you see my shalu *with the silk embroidery—At Amritsar..."*
He appeared to regain consciousness and he turned on his side. The wound on the ribcage started bleeding once again.
"Wazeera, give me some water."
—'She had said'...

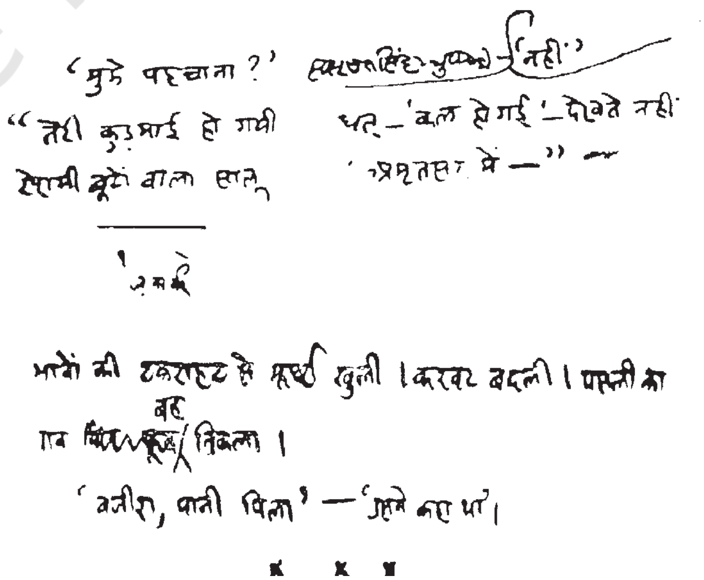
‘मुझे पहचाना?’ ‘नहीं’
“तेरी कुड़माई हो गयी धत्–‘कल हो गई’–देखते नहीं
रेशमी बूटों वाला सालू ‘अमृतसर में–”
भावों की टकराहट से मूर्छा खुली। करवट बदली। पसली का
घाव बह निकला।
‘वजीरा, पानी पिला’ – ‘उसने कहा था’।
x x x

The original text in the writer's hand

© NCERT not to be republished

Analysis of the Dialogue

The writer has used the words *Mujhe Pahchana*? Which makes a complete sense, but to translate this into English, the translator has to use the pronoun 'you' to convey the complete meaning, i.e., 'Do you recognise me?'

The word *Kurmai* is a punjabi word which means 'engagement'. The use of such words bring home the fact that the story and the characters are from the Punjab.

To translate plays, then, one should have a good ear; one should know how different kinds of people speak—in an area, in a community, in different formal or informal situations. You have to see how you can convey speech patterns—usages, rhythms, and accents—that characterise different people in one language and text into speech patterns in another language. This is crucial in drama, and perhaps not so crucial in prose fiction, where you can add information and say that the character speaks in an accent or language typical to a particular area. You need to get the tone and the register right when you translate a dialogue.

'To translate, one must have a style of his own, for otherwise the translation will have no rhythm or nuance, which come from the process of artistically thinking through and molding the sentences; they cannot be reconstituted by piecemeal imitation. The Problem of translation is to retreat to a simpler tenor of one's own style and creatively adjust this to one's author.'

— ***Paul Goodman***

To translate from an academic text, you need to know the terms in both languages; competence in language alone won't suffice in these translations. An example from the Class X, Science Textbook (NCERT) is given below.

प्रकृति उदासीनीकरण के विकल्प देती है

नेटल एक शाकीय पादप है जो जंगलों में उपजता है। इसके पत्तों में डंकनुमा बाल होते हैं जो अगर गलती से छू जाएँ तो डंक जैसा दर्द होता है। इन बालों से मेथैनॉइक अम्ल का स्राव होने के कारण दर्द होता है। पारंपरिक तौर पर इसका इलाज डंक वाले स्थान पर डॉक पौधे की पत्ती रगड़कर किया जाता है। ये पौधे अधिकतर नेटल के पास ही पैदा होते हैं। क्या आप डॉक पौधे की प्रकृति का अनुमान लगा सकते हैं? आप अब जान गए होंगे कि अगली बार पहाड़ों पर चढ़ते हुए गलती से नेटल पौधे के छू जाने पर आपको क्या करना होगा? क्या आप ऐसे ही पारंपरिक इलाज जानते हैं जो डंक लगने पर प्रभावी हों?

Nature provides neutralisation options

Nettle is a herbaceous plant which grows in the wild. Its leaves have stinging hair, which cause painful stings when touched accidentally. This is due to the methanoic acid secreted by them. A traditional remedy is rubbing the area with the leaf of the dock plant, which often grows beside the nettle in the wild. Can you guess the nature of the dock plant? So next time you know what to look out for if you accidentally touch a nettle plant while trekking. Are you aware of any other effective traditional remedies for such stings?

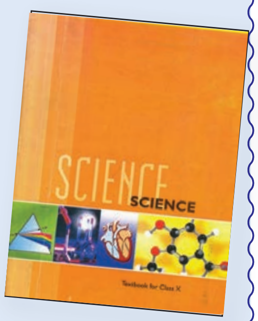

© NCERT not to be republished

Words, words, words

By now you have understood that though words are the smallest units of language that can stand by themselves, so, one has to be careful about articles in English. You have to be careful about your grammar in order to understand the significance of “a”/ “an” and “the”, as also their absence. We have a particular problem in translation into our Indian languages because we don’t have any such grammatical units; so we have to know how to convey any important information that the articles or their absence may convey. Let us look at some examples. What is the difference between “a man”, “the man”, and “man”? If you think that “a man” means “one man”, then how do you translate a sentence like “He likes a man to stand for his principles”? How would you translate the admiring statement, “He is a man!” What difference between do you see “He is going to jail”, and “He is going to the jail”? As you can see, if you don’t pay attention to the article, you may end up translating wrongly, saying that a man has been sentenced to serve a prison term when he may only have gone there to meet a client! (In case you haven’t worked it out yet, the one going to jail has been sentenced to imprisonment.)

You may still think that translation basically involves substituting words in one language with words in another that have the same meaning—so “North” becomes “Uttar” and “Eye” becomes “*Aankh*”. While this is true, one must remember that not all words have equivalents in other languages, and also that words gain different meanings in different contexts. For example, “North” in “Brigadier North issued the orders to advance” is a name of a person. When you try to translate “He had an eye for detail”, you may be forced to use some word other than “*Aankh*”, or take the word in the phrase commentators use—“Tendulkar has got his eye in now and is hitting the ball at will”. “Eye” is actually a good word to explore in its different uses—look up a good dictionary to see its different meanings; what does it mean when you are all eyes, or see eye to eye?

What is the English equivalent of *chacha* or *mama*. In English we have the word ‘Uncle’. Try translating the sentence, *mere chacha mere mama se baat kar rahe the*. Obviously the kinship terms in Hindi reflect shades and hierarchies of relationship that English does not recognise. It is also obvious that while we need to know the meanings of words in one language and their equivalents in the other, we also need to be careful about multiple meanings and how words take on different meanings in different contexts.

Make a list of all kinship terms in Hindi and in any other Indian language that you know. How many of them have equivalents in English? How would you translate them into English if they occurred in a text? What about names of food items? How about other culture specific terms like “kumkum” or “sindur”, “dhoti” or “kurta”? To think this through, think of what we do in Hindi to translate “shirt” or “skirt” or “trousers”.

See गतिविधि/Activity 25 on Page 139

© NCERT not to be republished

Understanding the Context

Words convey more than just simple meanings. They may also contain more information than a single word should! Let us take the word "*Aayi*" as a single word sentence in reply to a shouted out name like "*Harpreet*". When you read this as a part of a script, even if you are not sure of the gender of the person called when you read the name, you are certain that it is a woman who has been called out to when you read the reply because the word "coming" is gendered in Hindi as all verbs are. How can you replicate this in languages where this is not the grammatical rule? To put it simply, in this particular case, you cannot, at least not in the dialogue. So there will be still some suspense about the gender after the answer "coming" in the English translation, unless you add "she answered" after or before Harpreet's "Coming". You will have the same problem in reverse when you translate into Hindi – what if an English (or Bangla or Tamil) poet is addressing lines to his child and using the second person singular "you" throughout and you are not clear if the child is a boy or a girl? Therefore understanding the context is crucial.

Write down five English nouns that you use in Hindi.
What is their gender in Hindi?

Words can also have prefixes which change their meaning – like "rebuild", or "unclean", or "inconceivable" (which is actually more complex since it has a suffix as well and can be represented as in + conceive + able). The last word should bring us to suffixes, and words that can be formed like "hopeful" and "hopeless". Suffixes have grammatical functions and may express plurality (adding "s" for instance), gender, or negation (like in "unclean"). Thus with these words,

© NCERT not to be republished

गतिविधि–24 Activity–24

दिए गए अंश का हिंदी में अनुवाद कीजिए–

- The rain stops. The clouds begin to break up, the sun strikes the hill on my left. A woman is chopping up sticks. I hear the tinkle of cowbells. In the oak tree, a crow shakes the raindrops from his feathers and caws disconsolately. Water drips from a leaking drain-pipe. And suddenly, clean and pure, the song of the whistling thrush emerges like a dark sweet secrete from the depths of the ravine.

Translate the following passage into English–

- दो पहर रात गई है। अंधेरा है। सन्नाटा छाया हुआ है। बोध सिंह खाली बिस्कुटों के टिनों पर अपने दोनों कंबल बिछाकर और लहनासिंह के दो कंबल और एक बरानकोट ओढ़कर सो रहा है। लहना सिंह पहरे पर खड़ा हुआ है। एक आँख खाई के मुख पर है और एक बोध सिंह के दुबले शरीर पर। बोध सिंह कराहा।

you may sometimes have single word equivalents but usually you will end up using more than one word to convey their meanings.

We have already realised that words may have more than one meaning. Your translation can go wrong if you get the wrong meaning. Usually there is no excuse for getting a straightforward meaning wrong. If you get the denotative meaning of a word wrong you fail as a translator. This is why translators need to consult technical dictionaries and also read up on the subject fields they are translating texts in.

But words have other functions than just to name things. To name just two other functions; they show emotions and politeness; and they show attitudes. Let us take synonyms. Synonyms ought to be interchangeable but we always know one word is more apt than the other to express what we want in a given context. Think of how you address your mother or father when you want to show extreme affection (when you perhaps want something from them!). As per the context you would use the word. Similarly, we move from casual language to the most formal of speeches in our daily life. We use slang, we use baby talk, we use sports vocabulary, we use scientific or other subject-specific terminology, and may even say some set prayers handed down over centuries. So you have to understand the weight of words, to which **register** they belong, when you translate from one language into another.

- *Take a look at the following words—comfortable, comfy, homely, cosy, snug—and describe the differences between them.*

- *Find all the synonyms for the word "Black" when used as an adjective in a thesaurus. Select one of the meanings of "black" (e.g., "dirty") and try to find equivalents in Hindi for all the synonyms listed there.*

You will have realised by now that words can be slippery and that word for word translation still involves under-standing the sentence, and the context. So if someone asks you a meaning of a word, you may end up giving the person a wrong meaning, something that is not meant in the particular context. Translation calls for such caution twice over, in both languages.

"She is my sister and she is my aunt."

Earlier in the chapter it has been discussed how to deal with names of objects for which we don't have equivalents in other languages. This was followed by a question where you were asked to list five English nouns you use in Hindi. This is one of the ways in which languages and translators cope with words that have no equivalents – adopt the word in their own languages. Such words are called Loan Words since they are seen to be taken on loan from the other language. We say "cycle" and "scooter", "switch" and "tractor", and "atom bomb" and "fertiliser" in most languages without finding equivalents. There are other words too that enter our languages because

© NCERT not to be republished

either the field is new to us or because we just haven't felt the need to have words to articulate the concept. One word that has entered all our languages in the recent past is "tsunami". Computer related vocabulary is another such example.

We also need to deal with acronyms and abbreviations. An acronym is formed by taking the first letters of each word in a compound word or phrase, whereas, an abbreviation is the shortened form of a word. UN is the acronym for United Nations. What will you do if you come across the UN in your original text? What is it and how is it referred to in Hindi? With an abbreviation you need to know the original word in order to translate it correctly – for example, take the abbreviation "Mr.", which is the shortened form of "Mister". If you are a science student you know that every element has a symbol which refers to it – for example, Iron is "Fe". In Hindi, many of the English acronyms are used in the same manner, for example MLA.

Perhaps the most difficult words to translate are puns, which are words that are used for humorous effect, which is dependant on two words sounding alike or being spelt in the same way, or any such ambiguity. Read the following sentences and underline the word that leads to different readings:

- I wondered why the cricket ball was getting bigger. Then it hit me.
- The magician got so mad he pulled his hare out.
- When I saw the first strands of gray hair, I thought I would dye!

A book is like a garden carried in the pocket

Beyond Words: Phrasal Verbs, Idioms, and Proverbs

We have already established that words gain meanings from their contexts. The context may be the sentence, it may be the phrase or idiom or proverb, and it may also be the larger discourse. Actually, even a sentence can mean different things in different contexts. But let us look at phrasal verbs. A simple definition for the phrasal verb is that it is a verb plus a preposition or adverb which creates a meaning different from the original verb. Let us take the verb "run" and see how it can take on different meanings—"run into", "run down", "run by", "run in", "run across", "run against", "run for", "run off", and "run out of". Each of these phrases has a different meaning, and some of these phrases have more than one meaning. When you run into someone, you meet that person unexpectedly. Let us take the phrasal verb "run down". This can have four different meanings—to criticize, to find out (trace), to be very tired, and to "hit with a vehicle". Accordingly, one has to use

the phrase. See the different meanings in the following sentences:

- He always runs his children down.
- I finally ran his phone number down.
- My mother looks run down nowadays.
- I felt so bad when the dog was run over by the bus.

Find the meanings for the other phrasal verbs listed that are made with "run" and make sentences with them.

Idiomatic expressions and proverbs can also create unexpected difficulties for the translator. An idiom is a phrase where the words together have a different meaning from the dictionary definitions of individual words. When you tell someone, "A penny for your thoughts", you are really asking them to tell you what they are thinking about. When you say "a bit much", you are showing your annoyance. When something is "a steal" it is being sold really cheap, less than it is usually worth. When someone say, he is "all ears", it means that he is interested in listening to something. If someone asks you to "get a grip" they mean that you should control your emotions. Think of "*nau do gyarah hona*" in Hindi. Think of how to say it in English—you can't say that someone became nine to eleven! You cannot hope to give a word to word translation and be right. I hope you "get the picture" by now, that is you understand the situation fully. You need to know the idiom before you can use it for translation.

Proverbs, on the other hand, are old sayings that usually give advice—e.g., "A stitch in time saves nine." These are usually clearer in meaning and more easily understood but again one has to be careful when translating them. Proverbs come from specific cultures and histories. They may seem strange when translated but they may also work in the sense that we get an insight into another culture and we also learn a different way of looking at the world.

Sentences and Texts

You already know that the grammatical structure of sentences in English is different from that of Hindi. English is a SVO language (that is sentences are constructed in the following pattern—Subject Verb Object) whereas Hindi is a SOV language. *Aap apna khana khate hain* in Hindi but in English it becomes 'you eat your food'. So you have to be careful when you are translating from one language into another since you have to respect the grammar of your Target Language so that you don't end up with inelegant translations. You have to be careful about question forms, about tenses, about agreement and this is true in each of the languages.

Even sentences occur in contexts and the same sentence may mean different things in different situations.

Some utterances may be made ironically and therefore you should not understand them literally. Irony may be carried into another language easily so long as the context is clear.

By now you know that you have to be careful about your choice of translation units, i.e., the blocks of passages that you can translate at one time without

Tools for Translation

Remember that while tools do not make the man, a worker without his tools can do very little work. A translator needs the following:

- ✓ Good monolingual dictionaries (as you would need in both Hindi and English)
- ✓ Access to encyclopaedias
- ✓ Thesaurus in both languages
- ✓ Grammar books in both languages
- ✓ Guides to usage
- ✓ A good bilingual dictionary

making any mistakes about meaning. You need to be able to convey the ideas that are present in the source text in a consistent (and acceptable for the specific translation) style and register, producing a text that is written cohesively and coherently. For this you need to be aware of all reference markers within a text. You have to use these markers for they give you links between sentences. "Whereas" and "however" in the beginning of a sentence can be used when there is going to be a contrasting idea presented, "moreover" is used where additional information is going to be given.

But remember that you have to use all tools with intelligence and caution. In this computer age, many of these resources are available online. Computers have been used to assist translation (this is called CAT or Computer Assisted/ Aided Translation). Computers can help in two ways—the first by remembering how you translated sentences (or parts of sentences) previously and reminding you of your previous translations when such sentences crop up again. Another way is by doing translation based on grammatical rules and vocabulary lists that are fed into the computer.

Remember, translation is the transfer of meaning. Words are not only the names of things or of ideas. Words also convey emotions, they combine with one another, change their forms, and they follow rules of grammar that vary from language to language. The rules of grammar govern use of words but extra-linguistic factors such as culture, background etc., also render meaning to the text. We need to keep all this in view while translating from one language to another.

> *Translators live off the differences between languages, all the while working towards eliminating them.*
>
> — ***Edmond Cary***

While Translating Locate and Analyse

- What cannot be translated
- Now recreate the piece
- Make sure that the meaning is clear
- Read the text as a whole
- Take out the difficult/new words
- Write their English
- Look for appropriate synonyms
- Understand the context of the passage
- Sometimes one sentence is broken into two to convey the meaning.

© NCERT not to be republished

Points to Ponder

- It is necessary to have adequate knowledge of both the Source Language and the Target Language.
- One must understand the grammar and linguistic characteristics of both the languages.
- A good translator has to have a good understanding of the subject or area that is to be translated.
- As a translator it is necessary to understand the culture and nuances that go along with the languages.
- A word-to-word translation may not convey the entire meaning, therefore, understanding the text in totality is crucial for translation.
- Before translating the text, some research trying to understand the topic and the author certainly helps.
- Keep the tools of translation handy for reference.

'Translation is the paradigm, the example of all writing. It is translation that demonstrates most vividly the yearning for transformation that underlies every act involving speech, that supremely human gift.'

— Harry Mathews

Samples of translation of the same text done in a workshop. Sample 1 of the translation of a section of the text from the story '*Samvadiya*' by Fanishwar Nath Renu.

A reluctant Hargobind entered the village. People around recognised him at once— "O the messenger from Jalalgarh? Don't know what message he has brought"

"*Ram Ram Bhai!* You've brought good message, haven't you?"

"*Ram Ram Bhaiyaji!* I have only good message by the Grace of God".

"Hope you had good rains in your village?"...

Bahuria's brother could hardly recognise Hargobind. He had to introduce himself. The concerned brother immediately asked," How's my elder sister?" "All are fine, by the Grace of God," Hargobind replied.

Sample 2 of the translation of the same passage.

Unwillingly, Hargovind entered the village. The moment people saw him they recognised him as the messenger from Jalalgad. God knows what kind of message he has brought?

"Hello, Hope everything is fine?"

"O! Yes, all is well by God's grace"

"How is the weather there?...."

Brother of Bahuria could not recognise Hargovind. Hargovind introduced himself. The brother asked about the welfare of his sister. "By God's grace she is OK", he said.

© NCERT not to be republished

संवाद / Excercises

1 दिए गए अंश का हिंदी में अनुवाद कीजिए और लिखिए।

History and legend will grow around this day. It marks a milestorne in the march of our democracy. It is a significant date for the people of India who are trying to rebuild and transform themsleves. Through a long night of waiting, a night full of fateful portents and silent prayers for the dawn of freedom, of haunting spectres of hunger and death, our sentinels kept watch, the lights were burning bright till at last the dawn is breaking and we greet it with the utmost enthusiam. When we are passing from a state of serfdom, a state of slavery and subjection to one of freedom and liberation, it is an occasion for rejoicing. That it is being effected in such an orderly and dignified way, is a matter for gratification.

(क) अनुवाद करते समय आपको कहाँ-कहाँ और क्या-क्या कठिनाइयाँ आईं?

(ख) आपने उन्हें कैसे सुलझाया? लिखिए।

Translate the following passage into English.

मनुष्य का भविष्य

विकसित देश वे हैं जहाँ आधुनिक तकनीक का पूर्ण उपयोग हो रहा है। ऐसे देश नाना प्रकार की सामग्री का उत्पादन करते हैं और उस सामग्री की खपत के लिए बाज़ार ढूँढ़ते रहते हैं। अत्याधिक उत्पादन-क्षमता के कारण ही ये देश विकसित और अमीर हैं। विकासोन्मुख या गरीब देश उनके समान ही उत्पादन करने की आकांक्षा रखते हैं और इसीलिए उन सभी आधुनिक तरीकों की जानकारी प्राप्त करते हैं। उत्पादन-क्षमता बढ़ाने का स्वप्न देखते हैं। इसका परिणाम यह हुआ कि सारे संसार में उन वायुमंडल-प्रदूषण यंत्रों की भीड़ बढ़ने लगी है जो विकास के लिए परम आवश्यक माने जाते हैं। इन विकास-वाहक उपकरणों ने अनेक प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न कर दी हैं। वायुमंडल विषाक्त गैसों से ऐसा भरता जा रहा है कि मनुष्य का सारा पर्यावरण दूषित हो उठा है, जिससे वनस्पतियों तक के अस्तित्व संकटापन्न हो गए हैं।

(a) What did you find difficult to translate? Highlight those sections.

(b) How did you translate the difficult sections?

© NCERT not to be republished

2. *"The most necessary person is the person you are with at a particular moment, for no one knows what will happen in the future and whether we will meet anyone else. The most important business is to do that person good, because we were sent into this world for that purpose alone."*

(क) दिए गए अंश में से रेखांकित शब्दों के लिए हिंदी में कितने शब्द हो सकते हैं? लिखिए।

(ख) उपर्युक्त संदर्भ के अनुसार कौन-सी पंक्ति में कौन-सा शब्द उपयुक्त है? चुनिए।

(ग) आपको यही शब्द सबसे उपयुक्त क्यों लगता है? सोचिए और लिखिए।

कल शाम खूब पानी बरसा। ऐसे बरसा कि बुधिया के घर का छप्पर भी टूटकर बह गया। अगर बरसात से पहले मालिक ने पैसे दे दिए होते तो छप्पर की मरम्मत हो गई होती। मन ही मन बुधिया तिलमिलाया पर कुछ न बोला। बादल के साथ-साथ आँसू भी बरसे, पर उसका गुस्सा न बरसा।

(a) How many different kinds of words can be used in English for the underlined words?

(b) Out of these which word can best be used in the above passage?

(c) Why did you find that particular word the best choice? Explain.

3. दी गई बातचीत का हिंदी में अनुवाद कीजिए।

"No," Valli said, "I'm going back on this same bus."

She took another thirty paise from her pocket and handed the coins to the conductor.

"Why? Is something the matter?"

"No," nothing's the matter. I just felt like having a bus ride, that's all."

"Don't you want to have a look at the sights, now that you're here?"

"All by myself? Oh, I'd be much too afraid."

Greatly amused by the girl's way of speaking, the counductor said, "But you weren't afraid to come in the bus."

"Nothing to be afraid of about that," she answered.

"Well, then, why not go to that stall over there and have something to drink? Nothing to be afraid of about that either."

"Oh, no, I couldn't do that."

"Well, then, let me bring you a cold drink."

© NCERT not to be republished

Translate the following dialogues into English.

पिस्ते–बादाम

"दादी माँ, यह देखो", श्याम दौड़ता–दौड़ता अपनी दादी माँ के पास आया और बोला।
"क्या है?" दादी माँ काम में लगी थी, उसने उसकी ओर देखे बिना ही झल्लाकर पूछा।
"देखो ना, मैं क्या खा रहा हूँ", श्याम ने मुट्ठी खोलते हुए कहा।
"क्या खा रहा है, रे?" दादी माँ ने फिर पूछा।
"देखो ना, मेरे दोस्त सुनील की माँ ने दिए हैं", श्याम ने उत्तर दिया।
"अरे, यह तो पिस्ते–बादाम हैं।" दादी माँ ने हैरत से कहा–"उसके यहाँ ये कहाँ से आए?"
श्याम बोला–"सुनील का बड़ा भाई दुबई से आया है ना! वह ले आया है। बहुत–सा सामान लाया है। सुनील कह रहा था, हम यह सामान बेचेंगे और खूब पैसा कमाएँगे।"

4. तापमान के बिंदु देख कर –

(क) मौसम की इस जानकारी को रचनात्मक ढंग से लिखिए।

(ख) इस जानकारी का अनुवाद भी कीजिए समूह में बैठकर।

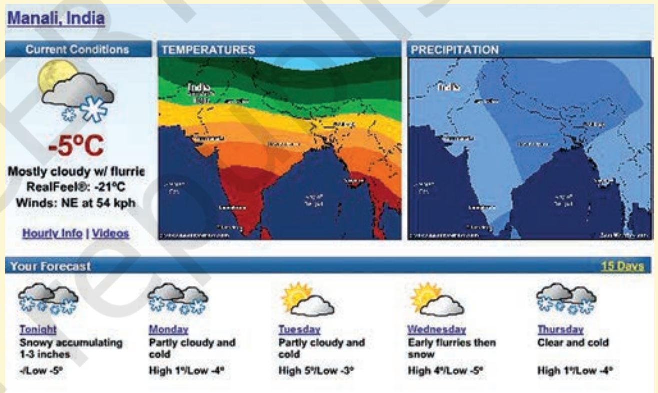

See the weather report and —

(a) Form a group and translate the weather report in English.

(b) Attempt a creative piece (on the basis of the weather report).

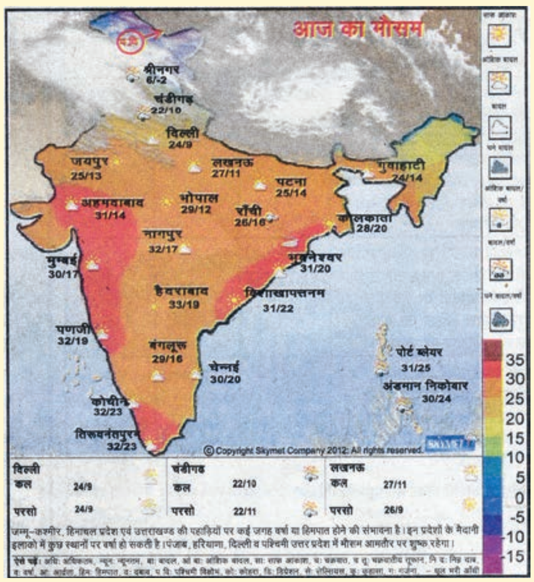

© NCERT not to be republished

5. नीचे दिए गए वाक्यों में अर्थ की दृष्टि से कोई अंतर दिखाई पड़ रहा है? क्या कुछ ऐसे वाक्य भी हैं जिनके एक से अधिक अर्थ हो सकते हैं। c,d और e में 'he' का प्रयोग दो बार हुआ है। क्या यह एक ही व्यक्ति के लिए हुआ है या अलग-अलग? इनका अनुवाद हिंदी में कर के देखिए।

(a) He sang and danced.
(b) He sang and then danced.
(c) He sang and he danced.
(d) He sang and then he danced.
(e) He said that he sang and he danced.

How do the following sentences differ from each other in meaning?
Do some of the sentences have more than one possible meaning.
Do the two uses of "वह" in lines क, ख, ग, and घ refer to the same person each time? Translate them into English.

(क) वह आया और निकल गया
(ख) वह आया ही नहीं
(ग) वह आने वाला है
(घ) वह आकर जायेगी
(ङ) वह भी आयेगी

6. नीचे दिए गए वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद करें और उनके अर्थ की भिन्नता को बताएँ।

(a) She bears a good moral character.
(b) She could not bear the loss.
(c) She bears the victory marks on her body.
(d) She bear is brown in colour.
(e) She bore the brunt of her wrath.

Translate the following sentences into English so as to bring out the differences in meaning.

(क) मैं पानी पीना चाहती हूँ।
(ख) आज बहुत पानी बरसा।
(ग) शिमला का पानी अच्छा है।
(घ) इस अंगूठी का पानी उतर गया है।
(ङ) यह पेड़ तीन पानी का है।

© NCERT not to be republished